बुनियादी शिक्षा

एक नई कोशिश

अंक: 12

बुनियादी शिक्षाः एक नई कोशिश

अंक–12

परामर्श

हृदयकांत दीवान

संपादक

के.आर. शर्मा

सलाहकार

भागचंद्र कुमावत
सुधा भंडारी

चित्रांकन

प्रशांत सोनी

कम्प्यूटर सैटिंग

इसरार अहमद

टंकण

प्रेम सिंह झाला

संपर्क

विद्या भवन बुनियादी शिक्षा संदर्भ केंद्र
रामगिरि, उदयपुर (राज.)
फोनः (0294) 2450806
Email: *vbsudr@yahoo.com*

इस अंक में

रपट

शिविर बना सीखने का ज़रिया — 5
– अनिता भटनागर

मेरा पन्ना

रंग रोगन करना सीखा — 10
–लाल चंद मीणा

ब्रश पकड़ना सीखा — 11
–पूरण सिंह चौहान

काम भी, मस्ती भी — 12
– हीरा लाल मीणा

जो सीखा, दूसरों को भी सिखाऊंगी — 13
– जया देवड़ा

स्कूल का शांत वातावरण खूब भाया — 14
– कल्पना देवड़ा

जो सीखा वो जीवन में काम आएगा — 15
– रमेश चंद्र वाखला

जब टू–व्हीलर खराब हो जाए तो.. — 16
– ईश्वर गामड़

खूब दोस्त बने शिविर में — 17
– चिराग शर्मा

बहुत सीखने को मिला — 18
– हेमंत शर्मा

प्रसंगवश

बुनियादी शिक्षा की प्रासंगिकता — 22
– प्रो. कृष्ण कुमार

सेमिनार से

काम और ज्ञान के रिश्ते को जोड़ने की दुविधा — 32
– कमलू महेंद्रू

बुनियादी तालीम की दुविधाएं — 38
– रतन लाल भोजक एवं संजय कुमार शर्मा

बुनियादी शिक्षा एक पहलू — 42
– अरविन्द फाटक

निहितार्थ

शांति के लिए शिक्षा — 46
– के. आर. शर्मा

यह न्यूज़लेटर "बुनियादी शिक्षाः एक नई कोशिश" परियोजना के तहत विद्या भवन बुनियादी विद्यालय, रामगिरि परिसर में स्थापित हस्त निर्मित कागज़ इकाई में तैयार कागज़ पर छापा गया है।

सौजन्य से : सर रतन टाटा ट्रस्ट, मुंबई

चिट्ठी-पत्री

बुनियादी शिक्षा का दस्तावेजीकरण

प्रिय साथियो

22–23 सितम्बर, 05 की कार्यशाला और 11–12 मार्च, 06 के सेमिनार में आज के संदर्भ में बुनियादी शिक्षा के सशक्तीकरण एवं सर्वव्यापीकरण के बारे में काफी विशद् रूप से चर्चा हुई है। इस चर्चा में बुनियादी शिक्षा के सर्वकालिक महत्व को समझते हुए उसके मुख्य आयामों व केन्द्रीय सिद्धांतों को आज के परिप्रेक्ष्य में व्याख्या करने की जरूरत महसूस की गई। उम्मीद है कि इस व्याख्या से वर्तमान शिक्षा के बुनियादीकरण के काम में हम सबको एक स्पष्ट दिशा व समझ मिल सकेगी। सेमिनार में हुई चर्चा व बुनियादी शिक्षा की व्याख्या को एक पुस्तक का स्वरूप देने का विचार किया है।

पुस्तक का प्रस्तावित शीर्षक है

इक्कीसवीं सदी में बुनियादी तालीम का नया अवतार–शिक्षा का बुनियादीकरण

पुस्तक के स्वरूप व उसमें शामिल सामग्री के बारे में आप क्या सोचते हैं? पुस्तक के शीर्षक के बारे में आपकी क्या राय है? क्या कोई विशिष्ट मसले आपके दिमाग में हैं जिन्हें प्रस्तावित किताब में शामिल करना चाहिए?

इन मसलों और आयामों पर बुनियादी शिक्षा से जुड़े साथियों से राय आमंत्रित हैं। साथ ही यदि किसी मसले पर लिखना चाहें तो हमें सूचित करने का कष्ट करें।

आपके पत्र के इंतजार में।

भागचंद्र कुमावत
बुनियादी शिक्षा संदर्भ केंद्र
विद्या भवन फतेहपुरा माहेनसिंह मेहता मार्ग
उदयपुर (राज.)

साहित्य मिला

आपकी ओर से भेजा गया साहित्य मिला। साथ ही बुनियादी शिक्षा की पत्रिका भी मिली। इसमें मेरा लेख छापने के लिए आपको धन्यवाद। अभी यहां ग्रीष्म की छुट्टियां है। नया सत्र शुरू होने वाला है। हमारे साथियों के साथ बैठक में इस पत्रिका और साहित्य के बारे में चर्चा करेंगे।

गोविंद रावल
विश्वमंगलम अनेरा गुजरात

नई तालीम कुछ अनुभव

आपने नई तालीम के क्षेत्र में काम करने के लिए एक मंच बनाने का सुझाव दिया है। यह बात हमें भी जरूरी लगती है। आपकी संस्था के द्वारा बुनियादी तालीम को जीवंत बनाने के लिए जो प्रयास किए जा रहे हैं वे सराहनीय हैं। आपने कार्यशाला और सेमिनार में जो प्रश्न उठाए हैं वो नई तालीम के शिक्षकों के लिए भी चुनौतीपूर्ण रहे हैं। इन सवालों को लेकर मेरे अनुभवों के आधार पर कुछ मत बने हैं जो यहां प्रस्तुत कर रहा हूं–

- विद्यार्थी अपने सर्वांगीण विकास के लिए जीवन की प्राथमिक जरूरतों के संदर्भ में सहज रूप से स्वावलंबी बने। ऐसी छात्रावासी और उद्योग वाली शिक्षा देना अनिवार्य समझते थे।
- छात्रावास में सहज रूप से किसी सेवा लिए बिना विद्यार्थी स्वावलंबी जीवन अपनाए ऐसी छात्रावास व्यवस्था खड़ी की थी। यह छात्रावास व्यवस्था स्वावलंबन पर टिकी होती थी। यहां सफाई, जल व्यवस्था, भोजन व्यवस्था, हिसाबी व्यवस्था, आरोग्य व्यवस्था आदि में शिक्षक भी विद्यार्थी के साथ काम करते थे। शिक्षकों का व्यवहार पुलिस व्यवस्थापक के माफिक नहीं होता था। शिक्षक और विद्यार्थी छात्रावास परिसर में ही एक साथ रहते थे। शिक्षकों के घर के द्वार विद्यार्थियों के लिए हमेशा खुले रहते थे।
- उद्योग के माध्यम से समूह जीवन की कई बातें विद्यार्थी सीखते थे। जैसे रसोई घर में, बिजली को लेकर आदि उद्योगों में विद्यार्थी एक साथ मिलकर ही काम करते थे।
- बुनियादी शिक्षा के तहत काम के द्वारा ही ज्ञान देने का आग्रह करते थे। शाला छात्रावास की प्रक्रिया वैज्ञानिक होने से व्यवहार ज्ञान जरूर दिया जाता था। ये संस्कार विद्यार्थी के मन में दृढ़ हो जाते थे। और वो अपने ज्ञान को समझने की कोशिश करते थे।
- मनुष्य की कल्पना शक्ति का शिक्षा में विनियोग है। और शिक्षा के द्वारा उसका विकास अनिवार्य है ताकि वह दूसरों का अनुभव प्राप्त कर सकें और ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रत्यक्ष अनुभव के साथ उसके महत्व को समझें और ज्ञान पाने की क्षमता का विकास हो।
- गांधी का उद्योग द्वारा शिक्षा देने का आग्रह का मतलब हर माहिती को उद्योग के द्वारा ही दी जाए, यह जरूरी नहीं है। दूसरी बात क्रिया और ज्ञान को जोड़ने का मतलब ज्ञानमय जीवन बनाने से है। ऐसा जीवन जीने का अनुभव विद्यार्थी को दिया जाता था। ज्ञान जीवन के लिए है न कि परीक्षा के लिए। यह बात हम विद्यार्थी को समझाते ही नहीं उसको अनुभव भी कराते थे। हमारे उद्योग वैज्ञानिक, आधुनिक और विकास के साथ–साथ प्रयोगशील और समाज के साथ जुड़ाव भी रखता था।
- विद्यार्थी शिक्षण के दौरान समाज दर्शन और समाज सेवा भी करते थे।
- शिक्षक का विद्यार्थी को काम दृष्टि देने का और क्षमता देने का है।

रामचंद्र पंचोली

लोक भारती सणोसरा, गुजरात

उल्टे पानी तैरना है तो...

आपके द्वारा भेजे परिपत्र मिले। बुनियादी शिक्षा : एक नई कोशिश का एक अंक भी मिला है। इसके पहले भी सेमिनार की सामग्री मिली।

बुनियादी शिक्षा के मूल तत्व शाश्वत हैं। दरअसल यह एक दृष्टि एवं प्रक्रिया है। यह समझ आ जाए तो फिर नाम, रूप और पद्धति में क्या रखा है। हम कितना ही खर्च क्यों न करें, सच्ची एवं सही शिक्षा के बिना सुचारू विकास संभव नहीं है। आजकल की शिक्षा प्रणाली समाज में वर्ग भेद तो करती ही है वर्ग को विकृत भी करती है। विडबंना की बात कि जीवन के लिए इतनी उपयोगी भी नहीं है। इसके मापदंड एवं लक्ष्य बिंदु स्पर्धा, तुलना, दूसरों से आगे निकल जाना, दूसरों की अपेक्षा ज्यादा पैसा बटोरना, सुख–सुविधामय जीवन जीना है। समाज के लिए यह घातक ही सिद्ध होगा और हो रहा है। पर्यावरण, मानव जीवन सब पर विपरीत असर होगा और हो रहा है।

हमने अपने यहां छोटा सा प्रयोग प्रारंभ किया हैं। नाम रखा है जीवन शाला। सरकारी मान्यता नहीं ली। ग्रांट लेने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इस शाला में कक्षा सात पास बच्चों को लेते हैं। उनको थोड़ा पढ़ाना, हुनर सिखाना, श्रम कराना, सामाजिक अनुबंध–अनुभव बना रहे ऐसे कार्यक्रम करना हमारा लक्ष्य है। छात्रावास सबके लिए जरूरी है। गांव का बच्चा हो तो भी छात्रावास में ही रहना पड़ता है। समूह जीवन का बहुत ही आवश्यक अंग है छात्रावास।

गत साल से ही यह प्रयोग शुरू किया है। बच्चों को चार साल हम यहां रखेंगे और उसके बाद उनको बोर्ड की परीक्षा देना होगा। बच्चे को आगे यदि परीक्षा नहीं देना होगा तो नहीं देगा। लेकिन इन चार सालों में अपने पैर पर खड़ा हो सके ऐसे हुनर या कौशल उसको सिखा देंगे।

बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ाना, खुद ही पढ़ता रहे–स्व अध्ययन, उसकी उत्पादकता एवं सृजनशीलता बढ़े, जिम्मेदार नागरिक बने एवं जीवन में जरूरी और कुशलताएं, संस्कार प्राप्त करे, यही हमारी अपेक्षाएं हैं। अभिगम यानेकि Attitude एवं आत्मश्रद्धा प्राप्त कर ले तो राह आसान हो जाएगी।

हमारा बहुत ही छोटा सा प्रयास है यह। विगत साल दस बच्चे थे। इस बार पंद्रह नए आए हैं। हमारे लिए बच्चों की संख्या महत्व की है भी और नहीं भी। पूरी दौड़ अंग्रेजी माध्यम एवं पब्लिक स्कूल, फार्मल एज्यूकेशन की ओर है। हम तो बिल्कुल मुफ्त शिक्षण दे रहे हैं। यहां एक–दो साल पढ़कर किसी ओर स्कूल में जाना होगा तो फिर सातवीं पास होगा जो आठवीं में प्रवेश लेगा। फिर भी अभी हमारा यह प्रयोग चल रहा है। शिक्षक भी अच्छे मिले हैं जो समझदारी से काम करते हैं।

आपके अभियान को धन्यवाद! शुभकामनाएं । हम आश्वस्त हैं कि उल्टे पानी तैरना है तो मेहनत कहीं ज्यादा करना ही पड़ेगी। बुनियादी शिक्षा की पत्रिका एवं और भी सामग्री हमें भेजते रहिए।

रमेश संघवी
सुशील ट्रस्ट
सोन टेकरी, नीलपर
जिला–कच्छ, गुजरात

ग्रीष्मकालीन शिविर

अवधि (17 मई से 15 जून 2006)

काम और ज्ञान की दुनिया को जोड़ने की एक कोशिश

शिविर बना सीखने का ज़रिया

रपट– अनिता भटनागर

बुनियादी विद्यालय का एक नजारा! स्कूल बंद हो चुके हैं लेकिन भरी गर्मी में यहां बच्चे, युवा स्त्री–पुरूषों का जमघट लगा हुआ है। जमघट इसलिए कि यहां पर सीखने–सिखाने का शिविर चल रहा है। इस शिविर में दैनिक जिंदगी के काम सिखाए जा रहे हैं। शिविर में स्कूटर सुधारना सिखाया जा रहा है। एक कक्ष में बिजली के उपकरणों को सुधारना सिखाया जा रहा है। अलग–अलग कार्नस में तल्लीनता से सीखने–सिखाने की प्रक्रियाएं जारी है। यहां पर शिक्षक (शिक्षिकाएं) और छात्रों में कोई दूरी नहीं है बल्कि एक दोस्ताना रिश्ता देखने को मिल रहा है।

उल्लेखनीय है कि शिविर में कोई भाषणबाजी नहीं होती, न ही कोई औपचारिकताएं होती है। भाग लेने वाले बच्चों, महिलाओं और पुरूषों की भावनाओं को पूरी तरह से तव्वजो दी जाती है। अपेक्षा यही होती है कि वे ऐसा कुछ सीखें जो कि उनकी जिंदगी से जुड़े। जो रपट बच्चों ने लिखी वे गवाह हैं कि आज के संदर्भ में भी जीवन से जुड़े कामों को सीखने का जज्बा उनमें बरकरार है। रपटों में इस बात की बार–बार मांग की जा रही है कि शिविर में समय कम पड़ता है। कईयों ने इच्छा व्यक्त की है कि वे एक से ज्यादा हुनर सीखना चाहते हैं।

दरअसल जब भी सीखने के और हाथों से काम करने के अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं वहां पर हर कोई चुंबक की तरह खींचे चले आते हैं। पिछले अनुभव बताते हैं कि शिविर के आयोजन का बच्चे क्या और बड़े क्या हर कोई इंतजार करते रहते हैं। रामगिरि के आसपास के निवासियों का इस शिविर में प्रतिनिधित्व अपेक्षाकृत ज़्यादा होता रहा है। जैसे–जैसे इस शिविर की सुगंध फैल रही है इसमें भाग लेने वालों की संख्या में ईज़ाफा हो रहा है। यह एक पैमाना है जो शिविर की सफलता को इंगित करता है।

इस अंक में हम इस शिविर की रपट और शिविर में भाग लेने वालों ने जो भी महसूस किया है उसको हुबहू प्रस्तुत कर रहे हैं।

हर वर्ष की तरह विद्या भवन बुनियादी माध्यमिक विद्यालय, रामगिरि के अंतर्गत विद्या भवन पॉलिटेक्निक महाविद्यालय व स्थानीय विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में एक माह के लिए ग्रीष्मकालीन शिविर आयोजित किया गया। शिविर में सिलाई, सुथारी, पेन्ट वार्निश, घरेलू विद्युत उपकरणों की मरम्मत, खाद्य प्रसंस्करण आदि से संबंधित कौशलों के विकास के लिए बच्चों को अवसर उपलब्ध कराए गए। इस शिविर में विगत् सालों में आयोजित किए जाने वाले शिविरों से कुछ हटकर गतिविधियां भी चलाई जैसे सॉफ्ट टॉयज, ब्यूटी कल्चर, वाहन मरम्मत आदि।

सभी गतिविधियों में कुल 155 छात्र–छात्राओं, महिलाओं–पुरूषों ने भाग लिया जो कि आस–पास के लगभग 13 गाँवों में निवास करते हैं। हमारे लिए हर्ष का विषय है कि कड़ी से कड़ी जुड़ते हुए एक श्रृंखला बनती है ठीक उसी प्रकार से आसपास के 13 गाँवों के विद्यार्थियों को विद्यालय से जोड़ने का काम इस

शिविर के माध्यम से हुआ। साथ ही निराश्रित बाल सेवा गृह जीवन ज्योति, सुखेर एवं सम्पर्क संस्थान झाबुआ, मध्यप्रदेश के 20 बच्चों व 2 अध्यापकों ने भी प्रशिक्षण प्राप्त किया। झाबुआ से आए प्रशिक्षणार्थियों ने कागज़ प्रोडक्ट व कंप्यूटर का भी प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इस शिविर में जो काम सीखे गए और जो सामग्री तैयार की गई या सुधारना सीखा उसकी एक बानगी कुछ इस प्रकार हैः

सॉफ्ट टॉयज

इस गतिविधि में 19 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया और पूरे एक माह के प्रशिक्षण के दौरान 4 डोनाल्ड डक 4 खरगोश 3 मछली 11 कछुए, 4 हाथी, 4 बन्दर, 4 ट्विन्स, 4 टेडी बनाए गए।

फूड प्रिज़र्वेशन

इस गतिविधि में 23 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया । जिसमें 5 छात्राएं एवं 18 छात्रों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान निम्न खाद्य पदार्थ बनाए गए और बेचे गए

क्र.	नाम	तैयार माल की संख्या	माल बिका	माल बचा
1.	नारंगी शर्बत (कृत्रिम)	2 बोतल	–	2
2.	खसखस शर्बत (कृत्रिम)	2 बोतल	–	2
3.	गुलाब शर्बत (कृत्रिम)	2 बोतल	–	2
4.	गुलाब शर्बत (पत्तियों का)	8 बोतल	4	4
5.	पाइनएपल शर्बत	3 बोतल	2	1
6.	केरी–पोदिना शर्बत	34 बोतल	20	14
7.	केरी–गोंदे का आचार	15 किलो	14	1
8.	मिर्च आचार	8 किलो	6	2
9.	सिरका	1 बोतल	–	1
10.	केरी का आचार	75 किलो	70	5
11.	पाचक आजवइन	300 ग्राम (3 डिब्बे)	–	300 ग्राम
12.	लहसुन का आचार	1 किलो	–	1
13.	आम का जैम	4 डिब्बे	–	1
14.	नींबू शर्बत	3 बोतल	2	1
15.	आम शर्बत	2 बोतल	–	2
16.	लौकी जैम	3 डिब्बे (250 ग्राम)	–	3
17.	पॉपकॉर्न	2 किलो	–	–

इसके अलावा बच्चों को खमण ढोकला, जलेबी, इडली, समोसा, ब्रेड रोल, आदि बनाना सिखाया गया।

ब्यूटी कल्चर

इस गतिविधि 20 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया और प्रशिक्षण के दौरान शारीरिक सौंदर्य निखारने के अनेक गुर सीखे।

क्र.सं.	खण्ड अ	खण्ड ब	खण्ड स
1.	चेहरे का सौन्दर्य	चेहरे का मेकअप	केश सौन्दर्य
2.	फेशियल	पार्टी मेकअप	हीना पैक
3.	ब्लीचिंग	मॉडल मेकअप	हेयर कटिंग
4.	फेस पैक	थियेटर मेकअप	फॉर हेड
5.	थ्रेडिंग (Eye Brow)	दुल्हन मेकअप	मेंहदी लगना
6.	मुल्तानी मिट्टी का पैक	मिश्रित पैक	चंदन–गाजर का पैक
7.	वेक्सींग	मैनिक्योर	पैडिक्योर

घरेलु विद्युत उपकरणों की मरम्मत एवं रखरखाव

इस गतिविधि में 21 शिविरार्थियों ने भाग लिया। एक माह के प्रशिक्षण के दौरान प्रथम सप्ताह में घरेू विद्युत वायरिंग का अभ्यास, स्विच बोर्ड पर एवं दीवार की बजाय प्लाई पर पी.वी.सी. एवं केसिंग, केपिंग का प्रयोग करके विद्युत वायरिंग सिखाई गई।

द्वितीय सप्ताह में घरेलू विद्युत वायरिंग का अभ्यास करवाया गया जिसमें सीढ़ियों की वायरिंग एवं समान्तर क्रम, श्रेणी क्रम संयोजन, मीटर बोर्ड तैयार करवाना, फ्यूज का उपयोग, एक कमरे की वायरिंग जिसमें सॉकेट, बल्ब, ट्यूब लाईट, पंखा, फ्यूज इंडिकर आदि को कंट्रोल कर सके। टेस्टिंग बोर्ड तैयार करवाया गया। सिंगल और डबल ट्यूबलाईट सर्किट असेम्बलिंग करवाया।

तीसरे सप्ताह में घरेलू विद्युत उपकरणों की मरम्मत जिसके अंतर्गत आयरन, (साधारण, ऑटोमेटिक, लाईट वेट), विद्युत केतली, विद्युत कढ़ाई, सिंगड़ी हीटर, सिंगल रोड़ रूम हीटर, इमर्शन रोड, सेडविंच टोस्टर, हीट कनेवेक्टर, टोस्टर, विद्युत घंटी, टेबल लैम्प इन सभी उपकरणों की सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक जानकारी दी गयी। चतुर्थ सप्ताह में छत का पंखा एवं टेबल पंखा इसके अन्तर्गत पंखा खोलना, पार्टस की जानकारी,बाइंडिंग व टेस्टिंग करना सिखाया गया। मुख्य छत के पंखे की बाइडिंग को दुबारा रिवाइंड किया गया जिसमें सभी बच्चों ने एक–एक क्वाईल बनाई।

पेन्ट एवं वार्निश गतिविधि में 23 छात्रों ने भाग लिया। इसके अन्तर्गत परीक्षा कक्ष का टेबल रिपयरिंग एवं कलर किया गया। प्राईमरी कक्षा के लिए 7 जूता स्टेण्ड बनाए गए और 1 सिलाई कक्ष का टेबल बनाया गया।

1. टेबल के टॉप (3 x 2) = 1
2. बैंच रिपेयरिंग एंव कलर – 1
3. स्टोर के दरवाजे के 4 एम.एम. Plywood साईज (15" x 44 1/2") को ठीक किया।

वुड एवं कलर करने का काम

60 दरवाजे, 8 जूता स्टेण्ड, 37 खिड़कियाँ, 6 अलमारी, 24 एंगल, 1 पानी का टेंक, 7 धोवना, 10 पटिये, 3 विकिट, 26 ब्लेक बोर्ड पर पेंट का कार्य किया गया। कम्प्यूटर कक्ष की 1 कुर्सी रिपेयरिंग की, खाद्य प्रसंस्करण कक्ष के ज्यूसर के लिए लकड़ी का हेण्डल बनाया।

सिलाई गतिविधि

इस गतिविधि में 30 महिला शिविरार्थियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान सिलाई मशीन की जानकारी, रखरखाव, काज–बटन, सिलाना, पेपर ड्राट तैयार करना, पेपर कटिंग के माध्यम से समीज, सलवार, ब्लाउज, पेटिकोट बनाना सिखाया गया। जिसके अन्तर्गत 8 किलो ग्राम थैली के कपड़े 30 रुपए प्रति किलो के भाव से खरीदे गए। इनसे 60 थैलियां बनाई गई। 30 मीटर समीज का कपड़ा खरीदा गया। जिससे 30 समीज बने व 8 समीज का कपड़ा बचा है। 80 मीटर पेटीकोट का कपड़ा खरीदा गया जिससे 35 पेटीकोट तैयार किए। 80 मीटर कपड़ा सलवार के लिए खरीदा गया जिसमें 22 सलवार बनाई गई व 18 सलवार का कपड़ा बचा हुआ है।

टू व्हीलर रिपेयर

इसमें 20 युवाओं ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान ऑटोमोबइल का परिचय, टू व्हीलर चेचिस इंजन, फ्यूल सिस्टम, ब्रेक, क्लच वायर, लाइट सिस्टम, बेटरी सिस्टम, चैन व चैन कवर, व्हील, ट्यूब आदि की मरम्मत करना सिखाया गया। इस शिविर का समापन 15 जून 2006 को सुबह 8 बजे से 11 बजे के बीच एक समापन समारोह के दौरान हुआ।

(अनिता भटनागर– बुनियादी विद्यालय रामगिरि में खाद्य प्रसंस्करण के काम में संलग्न।)

मेरा पन्ना

रंग-रोगन करना सीखा

हम यहां सबसे पहले आए तो हमको सर ने बताया कि तुमको काम करना पड़ेगा। फिर सर को हमने कहा कि तुम जो काम कराओगे वहीं काम हम करेंगे। हम इस स्कूल में दिनांक 17/5/2006 से 15/6/2006 तक गतिविधि की। हमको सर ने बहुत कुछ समझाया और सिखाया है।

हमने सबसे पहले जूते रखने वाला स्टेंड बनाया और सबसे पहले लकड़ी की माप कर ली। फिर लकड़ी को मीटर से मापी। और उसके अनुसार लकड़ी ली और उस पर खिली ठोकी। और उसे रेतमाल से घीसा और उसे सबसे पहले सफेद रंग किया। फिर हमने स्कूल के दरवाजे पर रंग किया और स्कूल की खिड़की पर भी रंग किया था। हमने टेबल बनाया और उस पर भी रंग हमने किया। और हमने बहुत काम किया और हमने बहुत सीखा। और हमको सर ने अच्छा पढ़ाया और हमने काम सीखा और हमें यहां और गतिविधि अच्छी लगी। और हमको बहुत अच्छा लगा।

हमको आगे कुछ काम नहीं मिलेगा तो हम लकड़ी का काम करेंगे। हमको यहां बहुत अच्छा लगा। और हमको सामग्री के बारे में जानने को मिला।

वाल चंद्र मीणा
कक्षा छठी
विद्या भवन सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में अध्ययनरत
जीवन ज्योति निराश्रित बालग्रह, सुखेर में रहते हैं।

मेरा पन्ना

ब्रश पकड़ना सीखा

जब यहां आया तो सबसे पहले बरगद के पेड़ के नीचे बैठे थे। तो मेडम ने कहा कि जो जिस गतिविधि में जाना चाहते हैं उस गतिविधि में चले जाएं। तो हम चले गए। पिछले साल मैंने अचार की गतिविधि में भाग लिया था। तो इस साल अचार की गतिविधि मुझे अच्छी नहीं लग रही थी। तो इस दूसरे साल मैंने पैंट एवं वार्निश में भाग लिया है। तो मैं सुखेर होस्टल से यहां बस से आता हूं। पहले दिन यहां आया तो मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। दूसरे दिन आया तो सर ने मुझे एक कॉपी, एक पैंसिल और एक रबर दिया था। फिर कॉपी में पेंट और वार्निश के बारे में लिखाते थे। यह सिर्फ एक महिने के लिए था। इसमें मैंने जूते स्टेंड और टेबल बनाना सीखा। जूते स्टेंड हमने आठ नग बनाए हैं। और एक टेबल बनाया। और हमने पूरी बिल्डींग में रंग किया तो उससे सीखा कि ब्रश कैसे पकड़ते हैं, ब्रश कैसे धोते हैं और ब्रश को कैसे घीसते हैं। ब्रश तीन उंगलियों से पकड़ते हैं। ब्रश तारपीन से धोते हैं। लेकिन मैं इस स्कूल में नहीं पढ़ता हूं। और कक्षा 6 में पढ़ता हूं।

पूरण सिंह चौहान
कक्षा– 6ठी
विद्या भवन सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में अध्ययनरत
जीवन ज्योति निराश्रित बालग्रह, सुखेर में रहते हैं।

मेरा पन्ना

काम भी, मस्ती भी

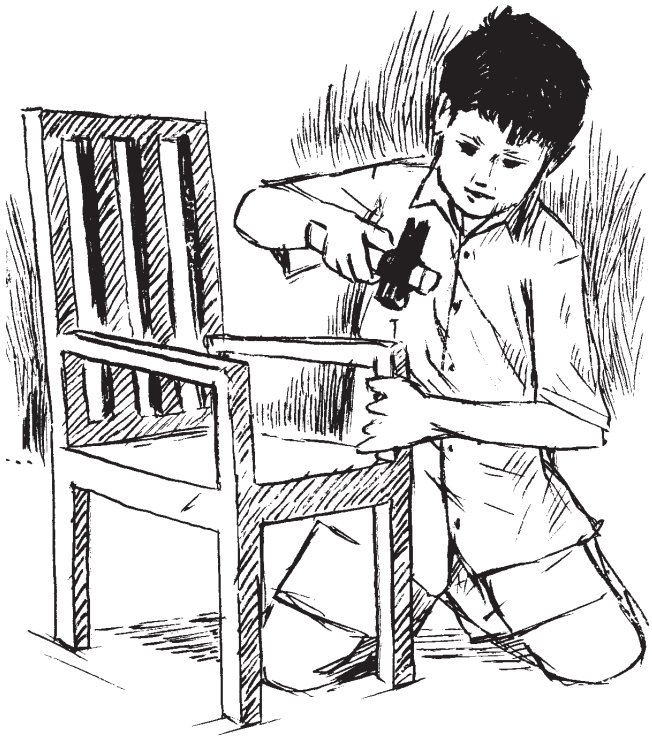

हमें इस गतिविधि में बहुत अच्छा लगा। क्योंकि ये पेंट एवं वार्निश और सुथारी है। और बहुत मस्तियां भी करते थे। हमने जूता स्टेंड व टेबल बनाना, रंग करना और टेबल कुर्सी बीच में से या कोई टुकड़ा टूट जाता है तो वापस ठीक करना सीखा। हमने बेट के, धोवने के, किमाड़ के, खिड़की के, टेबल के, जूता स्टेंड आदि के हमने रंग किया है। और हमें रंग करने में भी बहुत अच्छा लगता था।

हम अपने होस्टल में रहते थे तब हमको इन औज़ारों के नाम भी पता नहीं थे। हमको सिर्फ हथौड़ी का ही पता था। बाकी किसी का भी नहीं पता था। यहां आकर सब औज़ारों के नाम जाने हैं जो हमको पता नहीं था।

जब भी सर कक्षा के बाहर या इधर–उधर लड़कों को देखने जाते तो हम अंदर कक्षा में मस्तियां करते।

हीरा लाल मीणा
कक्षा– सातवीं
विद्या भवन सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में अध्ययनरत
जीवन ज्योति निराश्रित बालग्रह , सुखेर में रहते हैं।

मेरा पन्ना

जो सीखा, दूसरों को भी सिखाऊंगी

विद्या भवन स्कूल में जो प्रशिक्षण चल रहा है उसका पता मुझे दो तरह से चला। एक तो अखबार में पढ़कर पता चला और दूसरा विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों से कि विद्या भवन में 17 मई से प्रशिक्षण शुरू हो रहा है। मैंने सॉफ्ट टॉयज गतिविधि में भाग लिया तथा मैंने उसमें अनेक नए व प्यारे–प्यारे खिलौने बनाए। हमें गणेशजी, खरगोश, टेडी, बन्दर, हाथी, कछुआ, डॉल्फिन, डोनाल्ड डक आदि चीज़ें बनाना सीखने को मिली। उनमें से कुछ कठिन भी थी मगर हमारी दीदी (स्रोत सदस्य) ने उन्हें सरल तरीके से समझाया।

मैं कोशिश करूंगी कि जो मैं सीख रही हूं उसे और लड़कियों को भी सिखाऊं। मेरी प्रधानाध्यापिका मेडम से प्रार्थना है कि यह जो एक महीने का शिविर है उसकी अवधि और भी बढ़ाई जाए या पूरे साल इसकी अलग से पॉलिटेक्निक कॉलेज की तरह क्लासेस चलाई जाए जिससे की हम और ज्यादा सीख सकें। इस शिविर में इन क्लासेस की तरह और भी क्रिएटिव क्लासेस चलाई जाए, जैसे– पेंटिंग्स, डांस आदि।

हमारी क्लास में जो सिखाने वाले दीदी हैं उनका व्यवहार बहुत अच्छा है। उन्होंने दो वर्ष पूर्व इसी विद्यालय से प्रशिक्षण प्राप्त किया था। उनका लक्ष्य था कि मैं आने वाले वर्षों में इस विद्यालय में सीखाऊँ। और इस वर्ष उनका ये लक्ष्य पूरा हुआ। अतः हम चाहेंगे कि हमारे भी लक्ष्य इसी तरह पूरे हो जाए।

जया देवड़ा

बुनियादी विद्यालय रामगिरि से कक्षा दसवीं उत्तीर्ण।
वर्तमान में विद्या भवन सेकेण्डरी स्कूल में उदयपुर में कक्षा 11 वीं में अध्ययनरत।

मेरा पन्ना

स्कूल का शांत वातावरण खूब भाया

हमने इस शिविर में सर्वप्रथम आईब्रो बनाना सीखा। उसके बाद धीरे–धीरे 2–3 दिन बाद वैक्सिंग सिखाई गई तथा उसके बाद हमें फेशियल, मैनीक्योर, पैडीक्योर, फैस मसाज, नेल ट्रीटमेन्ट आदि सिखाए गए। यह सब प्रयोग हमने एक दुसरों के ऊपर किए। इस शिविर में हमने बहुत कुछ सीखा और हमारे कुछ खट्टे–मीठे अनुभव रहे। इस क्लास में हमें बहुत मज़ा आया। यहां पर हमने ऐसी चीजों का ज्ञान प्राप्त किया जिनके बारे में हमें बिल्कुल भी पता नहीं था। हमने यहां पर हेयर कटिंग और हेयर स्टाईल भी सीखी। हमने यहां पर नए–नए दोस्त बनाए और हमें इस स्कूल का शांत वातावरण बहुत अच्छा लगा।

हमें लगता है कि ये जो एक माह का समय था वह तो ठीक था परन्तु तीन घंटे का समय बढ़ाना चाहिए और यह सुविधा होनी चाहिए की एक दिन में दो–दो गतिविधियां सीखी जा सके। हमने इस शिविर में ये चाहा था कि हम अपने नए दोस्तों के साथ स्कूल की ओर से घूमने जाएंगे जैसा कि हर बार होता है। परंतु इस बार ऐसा नहीं हुआ। और हमारा शिविर भी खत्म हो गया। हम चाहेंगे कि ये क्लास पूरे साल भर चले। इसमें हमें मेक–अप सिखाया, सिर में मेंहदी लगाना बताया, हेयर कटिंग बताई। परन्तु इस शिवर में हमारे पास कुछ सामान उपलब्ध न होने की वजह से हमें सीखने में कठिनाई हुई। और हम पूरी तरह नहीं सीख पाए। अतः हम चाहेंगे कि आने वाले शिविरों में इसकी पुर्त्ति हो। ब्युटी कल्चर की क्लास में हम चाहेंगे और भी ज्यादा अच्छे तरीके से सिखाया जाए। हम यह कह सकते हैं कि हमें इस शिविर से बहुत फायदा हुआ और हम इसमें बार–बार आना चाहेंगे।

कल्पना देवड़ा

विद्या भवन बुनियादी विद्यालय, रामगिरि से कक्षा 10 वीं उत्तीर्ण की। बाद में स्नातक किया।

मेरा पन्ना

जो सीखा वो जीवन में काम आएगा

ग्रीष्मकालीन शिविर (व्यवसायिक प्रशिक्षण शिविर) के दौरान मुझे जो अनुभव व सीखने को मिला ऐसा मेरे जीवन में आज दिन तक कहीं नहीं मिला। मैंने यहां ग्रीष्मकालीन शिविर के दौरान केवल एक माह में जो सीखा है वो भविष्य में बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा। ग्रीष्मकालीन शिविर का मैं पूरा–पूरा फायदा नहीं उठा सका कारण कि मुझे बीच में ही छोड़कर घर जाना पड़ गया। इस बात का मुझे दुःख भी है।

यहां मैंने प्रतिदिन इलेक्ट्रिक ट्रेड में प्रशिक्षण लिया। यह मेरे लिए नया था जो मुझे सीखने को मिला। इसमें अनेक घरेलू इलेक्ट्रिक उपकरणों की जांच, रिपेरिंग एवं घर की लाइट फिटिंग करना आदि सीखने को मिला। पहले में इन चीज़ों से अपरिचित था। साथ ही मुझे कंप्यूटर चलाना भी सीखने को मिला जबकि पहले मैंने 'की' बोर्ड को हाथ भी नहीं लगाया था। साथ ही यहां अनेक प्रकार के लिफाफे बनाना, डायरियां, लेटर पेड, फाइल, बुक बाइंडिंग आदि कार्य सीखने को मिले जो कि हमारे दैनिक जीवन में उपयोगी है। ऐसा सुअवसर मुझे पहले कभी, कहीं नहीं मिला। इसलिए मुझे सीखने की सारी बातें अच्छी व रोचक लगी। साथ ही यहां का स्टाफ का व्यवहार भी अच्छा लगा। यहां के सभी टीचर लोग समय के बड़े पाबंद हैं।

उदयपुर झीलों की नगरी है, यह भी पहली बार सुना। यहां का वातावरण व गर्मी से तपा–तपा जरूर लगा किंतु यहां की ऊंची–ऊंची पहाड़ियों और पानी से लबालब भरी झीलों ने मेरा मन मोह लिया। यहां का परिदृश्य जो कुछ मैंने देखा, सीखा व समझा वह सब मेरे लिए नया और ताजा था। अतः ये मेरे हृदय पटल पर ज्यों के त्यों अंकित हो गए और हमेशा के लिए अंकित रहेंगे। जो कुछ सीखा है वह मैं अपने जीवन में ज़रूर करके रहुंगा।

रमेश चन्द्र वाखला

सम्पर्क बुनियादी विद्यालय रायपुरिया, जिला झाबुआ (मध्यप्रदेश)

मेरा पन्ना

जब टू-व्हीलर खराब हो तो...

मुझे यहां अच्छा लगा कि स्कूटर का कार्ब्यूरेटर साफ करना और मीटर केबल डालना और वरम डालना और स्कूटर चालू करना और बंद करना सीखा। अगर अपनी गाड़ी खराब हो जाए तो हमें कैसे चालू करना है इसके बारे में सिखाया। साथ ही ट्रेफिक के नियम भी समझाए, जैसे कि सड़क पर गाड़ी किस दिशा में चलाना चाहिए और साइड मांगते समय क्या करना चाहिए। स्टार्टींग क्वाईल कहां रहती है? मेगनेट को कैसे खोलते हैं और साफ कैसे करते हैं? क्लच वायर कैसे बदला जाता है? गाड़ी का ऑयलिंग कितने समय पर करवाना चाहिए? चैन कैसे टाइट करते हैं? आगे और पीछे का पहिया कैसे खोला जाता है? आगे पीछे का ब्रेक टाईट करना सीखे। आगे पीछे का शोकर खोलना, कार्ब्यूरेटर में कितने जेट होते हैं। अगर वायर डालना हो तो कैसे डालें? स्कूटर चालू करना और बन्द करना भी सीखा। अगर गाड़ी में मेगनेट भी साफ कर लिया तो भी गाडी स्टार्ट नहीं हो तो क्या करना चाहिए।

सड़क पर गाड़ी को किस साइड चलाना चाहिए। साइड लेते समय हमें जिस रस्ता चला रहा उसी रास्ते चलाना चाहिए। इंडिकेटर जलाकर साइड लेना व हाथ निकाल कर साइड लेना। यहां बड़ी खुशी से 1 महिना निकाला। ड्रम कहां रहता है और कैसे सुधारा जाता है। और अगर अपनी गाडी का ब्रेक नहीं लगता है तो अपन क्या करेंगे। अगर किधर जा रहे हैं और अपनी गाड़ी भीड़ में रूक गई तो अपन क्या करें, सर ने हमको और सिखाया। सर ने बोर्ड पर नहीं लिखाया, सर बोले ओर हमने लिखे।

ईश्वर गामड़
कक्षा– सातवीं
सम्पर्क बुनियादी विद्यालय रायपुरिया,जिला झाबुआ (मध्यप्रदेश)

मेरा पन्ना

खूब दोस्त बने शिविर में

विद्या भवन बुनियादी माध्यमिक विद्यालय, रामगिरि में ग्रीष्मकालीन शिविर में सात गतिविधियां इस प्रकार थी। ब्यूटी कल्चर, सॉट टॉयज, फ्रूड प्रिज़र्वेशन, पेन्ट वार्निश, सिलाई, घरेलू विद्युत उपकरणों की मरम्मत, दूपहिया वाहन मरम्मत। इस शिविर का समय प्रातः 8 से 11 बजे रखा गया। मैं खाद्य प्रसंस्करण कार्य दिनांक 17 मई से सम्मिलित हुआ उसमें अनेक प्रकार की चीज़ें बनाई गयी थी वह इस प्रकार है– अनेक प्रकार के शर्बत, केरी पोदीने का स्क्वैश, केरी का अचार, केरी–गोंदे का अचार, पॉपकॉर्न, मिर्ची का अचार, लहसुन का अचार, आम का स्क्वैश, लौकी जैम, आम जैम, पाचक अदरक़ आदि चीज़ें सीखीं। फल व सब्ज़ियों का परिरक्षण करना भी सीखा।

इस शिविर में मुझे सभी दीदियां अच्छी लगीं। उनका व्यवहार भी मुझे अच्छा लगा। हमारी अध्यापिका अनिता भटनागर जी भी अच्छी लगी। और अध्यापिका की सहायिका (बाईजी) भी अच्छी लगी। हमारी अध्यापिका ने हमें सारी चीज़ें प्रेक्टिकल करके दिखाई तथा हमने चीज़ें खुद ने बनाई। हमारी अध्यापिका हमें बहुत अच्छी रखती है और उनका व्यवहार मित्र जैसा है। पांचों दीदियों ने भी हमें बहुत अच्छा रखा।

भविष्य में व्यवसाय न मिलने पर हम इन चीज़ों को बनाकर हमारा रोज़गार चला सकते है तथा पेट भर सकते हैं। अंत में मैं यही कहना चाहूंगा कि ग्रीष्मकालीन शिविर के जरिए हम अनेक चीजों से अवगत हुए तथा इसके ज़रिए गरीब लोगों को भविष्य में रोज़गार के अवसर भी मिल सकते है। तथा ऐसे ही छोटे–छोटे शिविर के माध्यमों से भारत में बेरोजगारी धीरे–धीरे कम हो सकती है। तथा भारत एक खुशहाल भारत की ओर अग्रसर होगा।

चिराग शर्मा

विद्या भवन सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, उदयपुर में कक्षा 10 वीं में अध्ययनरत।
जीवन ज्योति निराश्रित बालग्रह, सुखेर में रहते हैं।

मेरा पन्ना

शिविर में बहुत सीखने को मिला

विद्या भवन बुनियादी माध्यमिक विद्यालय, रामगिरि द्वारा आयोजित शिविर में खाद्य प्रसंस्करण, सॉफ्ट टॉय, कंप्यूटर, पेन्ट, वार्निश, विद्युत कार्य, ऑटो रिपेयर, ब्यूटी कल्चर, सिलाई गतिविधियां आयोजित की गई। इन कामों के द्वारा विद्यार्थी को अपने जीवन में बहुत कुछ सीखने को मिल सकता है। विद्यार्थी इन कार्यों को ऐसे शिविरों में सीखकर अपना कोई भी व्यवसाय आसानी से कर सकता है। इतनी सारी बातें अलग–अलग लोगों से जानकर और सुनकर मुझे भी महसूस हुआ कि इस एक माह के शिविर में भाग लेना चाहिए। मैंने इस बारे में विद्यालय में आकर सम्पर्क किया। मुझे यहां से एक फार्म दिया गया। मैंने उस फार्म को भरकर जमा करवाया।

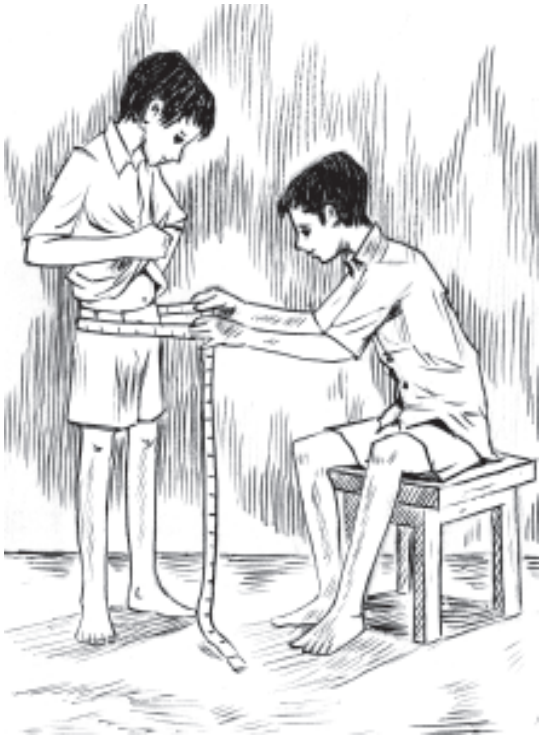

मैंने इस शिविर में घरेलू उपकरणों की मरम्मत एवं रख–रखाव (विद्युत) नामक गतिविधि में भाग लिया। मुझे इस गतिविधि में कार्य करने की रूचि थी। इसी करण मैंने इस गतिविधि में भाग लिया। शिविर के पहले दिन से ही मैंने कक्षा में जाना प्रारम्भ किया। शिविर के पहले ही दिन सर ने हमें औज़ारों के नाम और उनके उपायों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इन सभी औज़ारों को हमने प्रयोग करके भी देखा। इसके बाद हमें विद्युत एसेसरिज़ के बारे में बताया गया। इन विद्युत एसेसरिज़ को देखा और उनका किस तरह से उपयोग किया जाता है। कौनसी एसेसरिज़ किस काम आती है वह कहां पर लगती है आदि को देखा और समझने की कोशिश की।

हमें धातु की जानकारी दी गई और बताया की इन ध ातुओं का विद्युत के औज़ार बनाने में क्या उपयोग किया जाता है। हमें बताया गया कि कुचालक क्या होते हैं। विभिन्न प्रकार के इन्सुलेटर के बारे में जानकारी दी गई। इसके बाद हमें विद्युत सप्लाई में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न प्रकार के वायर के बारे में बताया, जैसे वी.आर.आई. सीटीएस, पीव्हीएस आदि। इन सभी वायरों को हमने देखा। इसके बाद हमें अपने मकानों के अन्दर सीढ़ियों की वायरिंग करना सिखाया। यह वायरिंग हमने बोर्ड पर करके सीखी। सीढ़ियों की वायरिंग करने के बाद हमें विश्वास हुआ कि हम भी इस प्रकार का कार्य आगे कर सकते है। इस वायरिंग में हमें पता चल सका कि

कौनसा वायर किस–किस जगह पर लगता है। सीढ़ियों की वायरिंग का सर्किट अपने द्वारा तैयार करने के बाद उस सर्किट को टेस्टिंग लैम्प की सहायता से चेक किया। चेक करने के बाद उस सर्किट में हुई गलतियों का हमें अहसास हुआ। इस तरह का वायरिंग करना हमें पहले नहीं आता था।

सीढ़ियों की वायरिंग का सर्किट पूरा करने के बाद हमें अपने मकानों के अन्दर लगने वाले स्वीच बोर्ड के बारे में बताया। सर ने हमें स्वीच बोर्ड का सर्किट तैयार करना सिखाया। इस स्विच बोर्ड के अन्दर काम आने वाली विभिन्न सामग्री और औज़ारों की जानकारी दी गई। इन सबके द्वारा हमने स्वीच बोर्ड के अन्दर वायरिंग करना प्रारम्भ किया। हमने उस पूरे बोर्ड का सर्किट तैयार किया।

हमने टेबल लेम्प के बारे में पढ़ा। सर ने बताया कि यह कितने प्रकार का होता है। यह किस कार्य में उपयोग किया जाता है। इस लेम्प को हमने खोलकर देखा और इसमें हुई खराबियों को दूर करने का प्रयास किया। इसके अन्दर हुई खराबियों को हमने टेस्टिंग लेम्प की सहायता से चेक किया। इसके बाद हमें विद्युत केतली एवं विद्युत कढाई के बारे में बताया। इन दोनों उपकरणों के विभिन्न भागों को अलग–अलग खोलकर देखा। इन भागों के अन्दर हमने सप्लाई टर्मिनल, प्रेशर प्लेट, एलीमेन्ट, सप्लाई आदि भागों को देखा और समझा कि इनं उपकरणों के अन्दर कौनसी चीज खराब हो जाती है और उसको किस प्रकार से बदला जा सकता है। इन सभी खराबियों को हमने टेस्टिंग लेम्प से चेक किया और उनको दूर करने का प्रयास किया। हमने इन उपकरणों के उपयोग के बारे में भी समझा। हमने इसके अन्दर अर्थ व लिकेज टेस्टिंग, सप्लाई वायर टेस्टिंग आदि को चेक किया।

हमने सेन्डविच टोस्टर के बारे में पढ़ा। सर ने हमें बताया कि इस टोस्टर के अन्दर क्या–क्या खराबियां हो सकती है। इसको हमने खोलकर भी देखा। खोलने के बाद हमें पता चला कि इसमें क्या होता है। इस टोस्टर के अन्दर थर्मोस्टेट, हीटिंग एलीमेन्ट होते है जिनके खराब होने की सम्भावना बनी रहती है और इनको हम नए डाल सकते है। इसके बाद हमें हीट कनवर्टर के बारे में बताया गया। सर ने हमें हीट कनवर्टर को खोलकर बताया और उनके अन्दर काम करने वाले विभिन्न प्रकार के पुर्जों के बारे में बताया। इस उपकरण के अन्दर हमें होने वाली विभिन्न प्रकार की खराबियों को बताया जैसे मोटर स्टार्ट नहीं होना, केपेसिटर जलना, रेगूलेटर खराब होना, कनेक्टर खराब होना, सप्लाई बन्द होना, एलीमेन्ट खराब होना आदि।

ऐसी अनेक होने वाली खराबियों को हमने टेस्टिंग लेम्प से चेक किया और उनको दूर करने का पूरा प्रयास किया। इन खराब पूर्जों को बदलकर हम वापस उस उपकरण को चालू कर सकते हैं। उस पूरे स्वीच बोर्ड का सर्किट तैयार करने के बाद हमने टेस्टिंग लेम्प की सहायता से उसको चेक किया। उस सर्किट को चेक करने के बाद हमें हमारी गलतियों का पता चला। इस सर्किट के द्वारा हमें बहुत कुछ सीखने को मिला। इस सर्किट की वायरिंग को सीखने के बाद हम हमारे घरों में भी इस प्रकार का स्वीच बोर्ड लगा सकते हैं। इसके बाद हमें समान्तर क्रम और श्रेणी क्रम के बारे में बताया गया। हमें प्रेस के बारे में बताया गया। इस दौरान प्रेस को खोलना, सप्लाई चेक करना, एलीमेन्ट चेक करना, खराब हो तो नए डालना, उसको वापस पेक करना आदि कार्य हमने अपने हाथों से किए।

हमने एक और स्वीच बोर्ड को तैयार करना सीखा जिसके अन्दर एक बल्ब को अपने घर के अन्दर और बाहर दोनों स्थानों से नियन्त्रित किया जा

सके। इस सर्किट को भी हमने पूरा करके टेस्टिंग लेम्प से चेक किया। इससे हमें अपनी गलतियों का पता चल सका। सर ने हमें मीटर बोर्ड के बारे में बताया। इस बोर्ड के अन्दर हमें वायरिंग करना सिखाया और बताया गया कि इस मीटर के अन्दर कौनसा वायर किस स्थान पर लगाया जाता है। मीटर के अन्दर से वायर का डी.पी. स्वीच में कनेक्शन करना और फ्यूज में कनेक्शन करना बताया गया। मीटर बोर्ड में कनेक्शन करने का पता चल सका और हम उन कनेक्शनों को समझ सके। यह मीटर बोर्ड के कनेक्शनों को हमने अपने हाथों द्वारा किया। इससे हमने बहुत कुछ सिखा।

इसके बाद हमें इमर्शन रॉड के बारे में बताया गया। इस इमर्शन रॉड के अन्दर हमने बहुत सारी बातें सीखी। इसके अन्दर हमने रॉड की टेस्टिंग करना, सप्लाई चेक करना, अर्थ व लिकेज टेस्टिंग करना जिससे की पानी की बाल्टी में करंट न आए आदि अनेक बातों को अपने हाथों से करके देखा। इसके अंदर हमें यह भी पता चल सका कि उस रॉड के

अंदर एक नाइक्रोम धातु का एलीमेंट होता है जो कि गर्म होने से उस बाल्टी का पानी भी गर्म होने लगता है आदि अनेक बातों को हमने करके देखा। इसके बाद सर ने हमें विद्युत टोस्टर के बारे में पढ़ाया। विद्युत टोस्टर को खोलकर बताया गया। विद्युत टोस्टर को खोलने के बाद इसके अन्दर लगे अनेक पुर्जों को हमने देखा जिनमें थर्मोस्टेट, टाइमर स्वीच, हीटिंग एलीमेंट आदि होते है जिनको हम नया डालकर वापस उस टोस्टर को चालू कर सकते है। इस टोस्टर के अंदर हमने एलीमेंट की टेस्टिंग और अर्थ टेस्टिंग की। विद्युत टोस्टर के अंदर अनेक प्रकार की खराबियां हो सकती है जैसे ओपन सर्किट, शार्ट सर्किट, अर्थिंग फॉल्ट आदि। इन सभी को टेस्टिंग लेम्प की सहायता से चेक किया और उनको दूर करने का प्रयास किया।

हमने रूम हीटर के बारे में पढ़ा। इस रूम हीटर के अंदर हमने विभिन्न पुर्जों को देखा जैसे एलीमेंट, चिनी मिट्टी की रॉड आदि। इन सभी के खराब होने पर अब हम बदल सकते हैं। इनका क्या उपयोग किया जाता है यह भी हमें बताया। इसके अंदर होने वाली खराबियों को भी हमने दूर करने का प्रयास किया। इसके अंदर हमने टेस्टिंग लेम्प द्वारा अर्थ टेस्टिंग, वायर टेस्टिंग आदि किए। सर ने हमें सिगड़ी हीटर के बारे में बताया। इस हीटर के अंदर हमने विभिन्न प्रकार के पुर्जों को देखा। इस हीटर के अंदर एलिमेंट होता है जिसके खराब होने के बाद हम उसको बदल सकते है। हमको सर ने सिंगल ट्यूब लाईट के बारे में बताया। इसके अंदर हमें उसके उपयोग, विशेषता, पार्टस, उद्देश्य, उपकरण आदि के बारे में जानकारी दी।

हमने ट्यूब लाईट में काम आने वाले विभिन्न पार्ट्स को टेस्टिंग लेम्प की सहायता से चेक किया और उनको दूर करने का प्रयास किया। इन पार्टस के

अन्दर जैसे स्टार्टर, चौक, ट्यूब, स्टार्टर होल्डर, ट्यूब पट्टी, ट्यूब होल्डर आदि को टेस्टिंग लेंप से अलग–अलग चेक करके देखा और उनको ठीक करने का प्रयास किया। इसके बाद इन सभी पार्ट्स के बारे में अलग–अलग विधि के द्वारा हमें बताया गया।

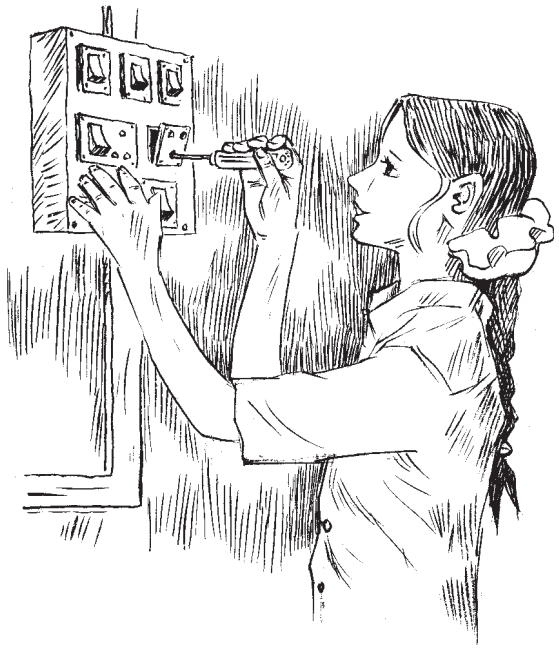

हमें छत का पंखा खोलना एवं उसको रिपेयर करना सिखाया गया। इस पंखे को हमें पूरा खोलकर बताया गया और साथ में यह भी बताया कि पंखे के अंदर कौन–कौनसी खराबियां हो सकती है। अगर पंखे की क्वाईल जल गई है तो उसको नई बांधना सिखाया गया। हमने पंखे के अंदर टेस्टिंग लेम्प की सहायता से कन्टीन्यूटी टेस्ट, अर्थ टेस्ट, शार्ट सर्किट टेस्ट आदि की टेस्टिंग की। इसके बाद में सर ने हमें टेबल पंखे को रिपेयर करना सिखाया। हमें बताया की टेबल पंखे में कौन–कौनसी खराबियां हो सकती है। पंखे के अंदर हमने विभिन्न खराबियों को दूर करना सीखा जैसे सप्लाई न आना, रेगूलेटर खराब होना, बाइंडिंग जलना, केपेसिटर खराब होना, बेरिंग सूखना, पंखे का अर्थ होना, बाइंन्डिग का शार्ट होना, अर्थ होना आदि। इन सभी खराबियों को हमने टेस्टिंग लेम्प से चेक किया और उनको दूर करने का प्रयास किया।

हमें सर ने विभिन्न प्रकार की विद्युत घंटियों के बारे में बताया। इन विद्युत घंटियों को हमें खोलकर बताया। इसमें होने वाली खराबियों को हम आसानी से रिपेयर कर सकते है। इसमें हमें यह भी बताया गया कि इस घंटी का कहां उपयोग किया जाता है। इसकी बनावट किस प्रकार होती है। इसका सिद्धान्त क्या है। इसमें होने वाली खराबियां जैसे ओपन सर्किट, शार्ट सर्किट, स्क्रू खराब होना, आदि बताए गए जिनको टेस्टिंग लेम्प की सहायता से चेक कर उनको दूर करने का प्रयास किया। छत के पंखे की हम किस प्रकार से रिवांइड करेंगे, उस पूरी विधि को हमें बताया और हमने उसी विधि के अनुसार छत के पंखे को रिवांइड किया।

मुझे इस ग्रीष्मकालीन शिविर में भाग लेकर बहुत अच्छा लगा। सर ने हमें बहुत स्नेह, लगन और प्यार से हर चीज़ को बहुत अच्छी तरह से समझाया। मैंने भी अपने पूरे मन से सभी बातों को समझा।

हमारी कक्षा का वातावरण बहुत अच्छा था। सभी छात्र अपना–अपना कार्य करते थे। इस शिविर के अन्दर पूरे विद्यालय का वातावरण बहुत अच्छा था। इस शिविर में मुझे कोई कमी नहीं दिखाई दी। मैं बस यही सुझाव देना चाहुंगा कि इस शिविर का समय थोड़ा बढ़ाया जाए ताकि विद्यार्थी कुछ अधिक सीख सकें।

हेमन्त शर्मा

विद्या भवन सीनियर सेकेण्डरी विद्यालय, उदयपुर में कक्षा 12वीं में अध्ययनरत।

प्रसंगवश

बुनियादी शिक्षा की प्रासंगिकता

प्रो. कृष्ण कुमार

दिगंतर जयपुर में आयोजित व्याख्यानमाला में दिनांक 10 जनवरी 1998 को प्रो. कृष्ण कुमार द्वारा बुनियादी शिक्षा की प्रासंगिकता पर व्याख्यान दिया था। व्याख्यान में प्रो. कृष्ण कुमार ने आज के संदर्भ में बुनियादी शिक्षा की प्रासंगिकता पर रोशनी डाली है। बुनियादी शिक्षा को लेकर समाज में क्या सोच है उनका जिक्र करते हुए उन दुविधाओं की चर्चा भी की है जिनके चलते इसको हाशिए पर पटकने की साजिश हुई है।

जब हम कहते हैं कि आज की शिक्षा में कई सारी खामियां हैं। और उन खामियों को दूर कैसे करें तो इसका हल बुनियादी शिक्षा में ही मिलता है। कोई आठ साल पहले दिया गया प्रो. कृष्ण कुमार द्वारा यह व्याख्यान हमारे लिए आज भी प्रासंगिक है।

यह व्याख्यान दिगंतर द्वारा प्रकाशित शैक्षिक विमर्श मई 1998 अंक से साभार किया गया है। बुनियादी शिक्षा के निहितार्थ संपादित भाग यहां प्रस्तुत है।

बुनियादी शिक्षा के बारे में आज खड़े होकर कुछ कहना वैसे भी काफी जोखिम का सौदा है। किसी जगह आप यह कहिए कि ये बीज यहां लगाइए, ये पौधा यहां लगाइए, तो लोग पहले कहेंगे कि इसका पुराना रिकार्ड काफी खराब है। इसके बारे में कोई भी नहीं कह सकता कि यह पौधा कभी बहुत ज्यादा फला फूला या इससे जो अपेक्षित परिणाम थे वो लोगों को मिले। बल्कि इसका उल्टा रिकार्ड ज्यादा स्पष्ट है। जब बुनियादी शिक्षा का पौधा लगाया गया और काफी अच्छी आबोहवा में लगाया गया, उस समय भी इसके अच्छे परिणाम चारों तरफ देखने को नहीं आए। कई सुखद परिणाम आए इसमें संदेह नहीं। लेकिन कुल मिलाकर आज के समाज में इसकी जो छवि है वो यही है कि इसको तो हम आजमा कर देख चुके और अब इसमें क्या रखा हुआ है। अक्सर बुनियादी शिक्षा की बात आने पर लोग यही कह देते हैं कि ये वो रास्ता है जो बहुत पीछे छूट चुका है। और अब हम जिस मुकाम पर खड़े हैं, इस मुकाम पर तो कोई नया रास्ता बताओ।

आज की परिस्थिति में हम जैसे बन गए हैं, हम सब तो नहीं कह सकते, क्योंकि हम में से बहुत से लोग उस पीढ़ी के सदस्य हैं जिसका जन्म ही गांधी के बाद हुआ, जिनको हवा में हल्की–सी महक तो मिली अपने बचपन में गांधी की उपस्थिति की, लेकिन जिन लोगों के जरिए मिली, उन के बारे में कहना ज्यादा स्पष्ट नहीं कि वो सचमुच गांधी के पास रहे।

तीन बातें जो बुनियादी शिक्षा के विचार के साथ शुरू से ही जुड़ी रही वे बड़ी मोटी सी हैं, और आज जबकि भारतीय शिक्षा से जुड़े हुए लोग यह देख रहे हैं, उन्होंने सब घाटों का पानी पीया है, तो उनको ये बातें बताना बहुत बड़ी मुश्किल नहीं है। और इन बातों को फिर से बताते हुए यह बात

शायद बुनियादी शिक्षा की पैरवी के पक्ष में ही जाती हो कि कम से कम आज यह स्थिति नहीं है कि हम यह कहें कि फलां घाट का पानी अगर पीते तो वह बेहतर होता। इन 50 वर्षों में हमने सब घाटों का पानी पी लिया। हमने समग्र शिक्षा भी देखी। हम कहीं समग्र दर्शन की खोज में 50 और 60 के दशक में रहे और आज यहां हम विखंडित दर्शन की खोज में न्यूनतम अधिगम स्तरों तक पहुंच गए हैं जिसमें हरेक व्यवहार अपनी ही छटा लिए हुए हैं और इन्हें आपस में पिरोने वाले किसी भविष्य दर्शन की कल्पना का कोई दृश्य नहीं है। सब तरह की चीज़ें भारतीय शिक्षा कई तरह से कई बार करके देख चुकी है और उसने बीजों को तोड़–मरोड़ कर, कई प्रकार से बोकर, अपने आपको जैसे दिखा लिया है कि कहीं कोई बात नहीं बनी। ऐसी स्थिति में उन तीन मुख्य विचारों को याद कर लेना काफी आसान हो जाता है, क्योंकि वो तीन विचार बुनियादी शिक्षा के मूल प्रस्ताव में निहित थे। आज हमें बेगाने नहीं लग सकते जितने कि तब लोगों को लगे होंगे, जब 1937 यानिकि आज से कोई 60 साल पहले गांधी जी ने बुनियादी शिक्षा का प्रस्ताव देश को दिया था। ये तीनों विचार हमारे लिए अब इतने ज्यादा परिचित हैं कि खतरा इस बात का है कि हम कहें कि अरे, यह सब तो हम जानते हैं, इसमें नया क्या है। और सचमुच यह बात कही जा सकती है कि बुनियादी शिक्षा के प्रस्ताव की अनुगूंजें हम इतने रूपों में सुन चुके हैं कि उस प्रस्ताव को अलग से रखना या उसकी विशेषताएं अलग से रखकर बताना गैर जरूरी है, शायद अनुपयोगी भी है। इसलिए इस हिस्से को मैं बहुत संक्षेप में आपको कहूंगा।

इन 50–60 सालों में शिक्षा के दर्शन में और शिक्षा के दर्शन को इस्तेमाल करने की प्रणालियों में तरह–तरह से बुनियादी शिक्षा का प्रस्ताव अपनी प्रतिछवियां पाता रहा है। ये नहीं कि उस प्रस्ताव में जान बूझकर ऐसी बातें कही हों, लेकिन वैसे ही शिक्षा के दर्शन का और खासतौर से इस बीच में जिस तरह का लेखन हुआ है उसमें कहीं न कहीं बुनियादी शिक्षा एक मौजूदगी के रूप में रही है और देश में ही नहीं विदेश में भी। वैसे बुनियादी शिक्षा के प्रस्ताव में ऐसी बात नहीं थी जैसे कि एकदम कोई निराला पदार्थ गांधी जी कहीं से खोज कर लाए हों। जो उन्होंने कहा था वह बड़ी ही, एक सामान्य जीवन के लिए मौजूं–सी बात थी। जिनको वे खुद अपनी युवावस्था में दक्षिणी अफ्रीका के दिनों में, जब उन्होंने स्वावलंबी जीवन के प्रयोग किए थे, आजमा कर देख चुके थे। और उनकी आत्मकथाओं में उन प्रयोगों का जो जिक्र है, उसको आप यदि पढ़ें तो लगता है कि अरे! उसके बाद इतने साल लग गए उनको शिक्षा का प्रस्ताव देने में? थोड़ा आश्चर्य की बात है, यह आश्चर्य कुछ घट सकता है अगर हम इस बात को याद करें कि दरअसल गांधी की राजनीति में एक लंबा शैक्षिक प्रयोग है लोगों को अपनी बात समझाने का, लोगों के सामने अपनी बात को, एक बात के रूप में नहीं बल्कि एक किए काम के रूप में रखने का। और यह मान कर चलें कि हम अपना जीवन अपने ढंग से जीएंगे तो उसकी सुगंध वैसे ही फैलेगी। हमें

बुनियादी शिक्षा के प्रस्ताव में ऐसी बात नहीं थी जैसे कि एकदम कोई निराला पदार्थ गांधी जी कहीं से खोज कर लाए हों। जो उन्होंने कहा था वह बड़ी ही, एक सामान्य जीवन के लिए मौजूं–सी बात थी। जिनको वे खुद अपनी युवावस्था में दक्षिणी अफ्रीका के दिनों में, जब उन्होंने स्वावलंबी जीवन के प्रयोग किए थे, आजमा कर देख चुके थे।

बताने की जरूरत ही नहीं होगी कि यह सुगंध क्या है? इस तरह के विश्वास गांधी की राजनीति में लगातार उन 50 वर्षों में दिखाई देते हैं जिनके बाद जाकर 1937 में एक उभरते हुए देश के संदर्भ में, देश की कल्पना के संदर्भ में, उन्होंने बुनियादी शिक्षा का प्रस्ताव रखा था।

बुनियादी शिक्षा की तीन बातें

तीन बातें हैं, एक तो हाथ का काम स्कूल में हो, दूसरी, स्कूल की शिक्षा स्थानीय परिवेश से जुड़ी हो। बहुत ही आम सी बातें हैं। और तीसरी, स्कूल में जो–जो विषय पढ़ाए जाएं, जो–जो कौशल पढ़ाएं जाएं, ज्ञान के जो–जो क्षेत्र वहां बच्चों तक लाए जाएं, वह अलग–अलग न होकर संगठित हो। उसी तरह से आपस में बंधे हों। मैंने आपसे ये तीन बातें इतनी लंबी भूमिका के बाद कही, क्यों कही, अब आप समझ गए होंगे। क्योंकि इन तीनों बातों को सुनकर आज जो व्यक्ति 22–24 साल का है, उसको एकदम लगेगा कि यह आदमी बासी रोटी हमारे लिए लाया। सचमुच यह रोटी अगर आप इस तरह से सुनते हैं तो बासी ही नजर आती है। हमने इन शब्दों को संभाल कर, लटकाकर ६ ाूप में, सब तरह से करके देख लिया है, ऐसा एक अहसास है। इन तीनों बातों को, खासकर काम, स्थानीयता या स्थानीय परिवेश का महत्व और पाठ्यक्रम को संगठित करने का प्रयास, इन तीनों को अलग–अलग तरह से, अलग–अलग संदर्भों में, देश के किसी न किसी हिस्से में या शायद राष्ट्रीय स्तर पर कई बार करके देख लिया गया है। और एक खास तरह की ऊब इन बातों को सुनकर श्रोता समूह को होने लगती है, इसका दोष मैं उनको नहीं देता। क्योंकि ये बातें ही ऐसी हैं जिनके बारे में आज एकदम उत्साहित होना कि ये नई बात होगी, कहना संभव नहीं है। बल्कि आज तो शब्दावली अगर नई नहीं हो तो कोई बात सुनने लायक नहीं होती। और इन बातों को बहुत संक्षेप में रखकर यहां छोड़ रहा हूँ क्योंकि इन सब बातों का अर्थ आप सबको पता है। अनुभव के स्तर पर भी और ज्ञान के स्तर पर भी। बस इसमें शायद जोड़ना इतना ही जरूरी है कि गांधी जी के द्वारा दिए गए बुनियादी शिक्षा के मूल प्रस्ताव में इस तीसरे वाले बिंदु को किसी हस्तकौशल के संदर्भ में उठाया गया था। इस संगठित रूप की परिकल्पना उन्होंने किसी विचारधारा के संदर्भ में नहीं उठाई थी, ना किसी मनोवैज्ञानिक संदर्भ में उठाई थी, बल्कि एक हस्त–कौशल के संदर्भ में उठाने की बात थी। क्योंकि जो उनका पहला विचार कि हाथ का काम स्कूल में हो, उसका आशय यह नहीं था कि हाथ का काम भी हो, बल्कि हाथ का काम स्कूल का केन्द्रीय विषय हो। वह इतना ज्यादा महत्वपूर्ण हो कि स्कूल के अन्य उपचार, जो तमाम सभी तरह के स्कूल की, ज्ञान की, कौशल की परंपराएं हैं, वो सब हाशिए पर चली जाएंगी, गौण हो जाएंगी और केन्द्रीय महत्व किसी हस्तकौशल का हो, जरूरी नहीं किसी एक हस्त–कौशल का हो, पर कम से कम एक पारंपरिक हस्त–कौशल का हो। अच्छा होगा यदि वह हस्त–कौशल ऐसा हो जो स्कूल के बच्चों के परिवेश में उपलब्ध हो। वही हस्त–कौशल बच्चों के स्कूल का केन्द्रीय उद्यम हो और उनके इर्द–गिर्द ज्ञान के पाठ्यक्रम के विभिन्न क्षेत्र बुने जाएं। और

तीन बातें हैं, एक तो हाथ का काम स्कूल में हो, दूसरी, स्कूल की शिक्षा स्थानीय परिवेश से जुड़ी हो। बहुत ही आम सी बातें हैं। और तीसरी, स्कूल में जो–जो विषय पढ़ाए जाएं, जो–जो कौशल पढ़ाएं जाएं, ज्ञान के जो–जो क्षेत्र वहां बच्चों तक लाए जाएं, वह अलग–अलग न होकर संगठित हो। उसी तरह से आपस में बंधे हों।

इस बुनावट को ही संगठित पाठ्यक्रम का नाम भी बुनियादी शिक्षा के संदर्भ में हम दे सकते हैं। ये बुनावट बच्चे के व्यक्तित्व की किसी सार्वभौमिक मनोविज्ञान की अवधारणा की नहीं है, न ही यह कोई राष्ट्रीय विचारधारा है बल्कि ये बुनावट उस कौशल से निकलनी चाहिए जो कि स्कूल के केन्द्रीय उद्यम के रूप में चुना है। और भी बहुत से आग्रह थे जिनमें से सबका जिक्र करना जरूरी नहीं है। खास तौर से जो उत्पादकता का आग्रह, दरअसल आप इतिहास पर नजर दौड़ा कर देखेंगे कि और जो आग्रह थे, उनको बाद में बहुत स्थान दिया गया लेकिन इस केन्द्रीय विषय पर ध्यान नहीं दिया गया। अभी आप सुनते हैं कि स्कूल में एक चीज कही जाती है 'वर्क एक्सपीरेंस' या कुछ और चीज़ें जो फैलाई गई हैं 'समाज में उपयोग के लिए उत्पादन कार्य' जिसके प्रत्येक शब्द पर बाकायदा आप संदेह कर सकते है। ये तमाम चीजें बुनियादी शिक्षा के प्रस्ताव को अपनाने के बाद उसकी स्मृति में, पाठ्यक्रम में रची गई और जो अभी तक चली आ रही है। इसे अपनाने के बाद एक आदमी की स्मृति जिस तरह की रह जाती है, उस तरह से वो बुनियादी शिक्षा की स्मृति को संजोए हुए हैं। इसलिए उन तमाम आग्रहों की चर्चा करना जरूरी नहीं है क्योंकि वे तमाम तो किसी न किसी रूप में उपलब्ध हैं जो मूल प्रस्ताव के मद्देनजर थे।

ऐसे ही मातृभाषा का कुछ महत्व शामिल था। स्थानीय परिवेश से जोड़ने की बात से मातृभाषा तो एक तरह से स्वाभाविक तर्क–प्रक्रिया के रूप में आ ही गई थी, उसे कहने की जरूरत नहीं थी, लेकिन फिर भी गांधी जी ने उसे बहुत अलग महत्व दिखाते हुए फिर से कहा। गांधी के समय तक मातृभाषा को स्थापित करने का धैर्य नहीं चुका था। आज मेरी समझ में हममें से पता नहीं कितने लोग इस बात को नई आस्था के साथ कह भी सकते हैं। शायद केवल मुख्यमंत्री लोग कह सकते हैं कि अब वो हिन्दी का प्रयोग करेंगे। जब कोई मुख्यमंत्री आपसे कहता है कि मैं आज से मातृभाषा का प्रयोग करूंगा, तो मुझे लगता है उससे कहूं कि भाई साहब, आप कह रहे हैं कि मैं आज से अपनी जुराबें धो कर पहनूंगा। आप को यह बताने की क्या जरूरत है? आप धोकर पहन लीजिए। लेकिन फिर भी ये बात बताने की है, आज के हिंदुस्तान में मातृभाषा की वकालत, मातृभाषा में शिक्षा की वकालत करने का कोई मायना नहीं है।

गांधी के समय तक मातृभाषा को स्थापित करने का धैर्य नहीं चुका था। आज मेरी समझ में हममें से पता नहीं कितने लोग इस बात को नई आस्था के साथ कह भी सकते हैं। शायद केवल मुख्यमंत्री लोग कह सकते हैं कि अब वो हिन्दी का प्रयोग करेंगे। जब कोई मुख्यमंत्री आपसे कहता है कि मैं आज से मातृभाषा का प्रयोग करूंगा, तो मुझे लगता है उससे कहूं कि भाई साहब, आप कह रहे हैं कि मैं आज से अपनी जुराबें धो कर पहनूंगा। आप को यह बताने की क्या जरूरत है? आप धोकर पहन लीजिए। लेकिन फिर भी ये बात बताने की है, आज के हिंदुस्तान में मातृभाषा की वकालत, मातृभाषा में शिक्षा की वकालत करने का कोई मायना नहीं है।

ये तीन बिंदु जो बुनियादी शिक्षा के मूल प्रस्ताव में थे इन बिंदुओं को मैंने केवल पंजीकृत करने के लिहाज से यहां पर आपके सामने रख दिया है। इसलिए नहीं कि आप ऊब महसूस करें बल्कि इसलिए कि जिससे ये सनद रहें। बीते हुए वक्त पर बार–बार एक ऐतिहासिक अंदाज में नजर लौटाए बगैर सहज विश्लेषण की धारा में बहते हुए इस प्रस्ताव की कुछ

बातों को परखने की नजर से, परखने की नहीं इनका मूल्यांकन करने की कि शिक्षा के जो प्रमुख संदर्भ हैं उनमें बुनियादी शिक्षा आज कैसे दिखेगी, अगर उसका कोई रूप आज की तारीख में संवारा जाए, निखार के दिखाया जाए, उस पौधे को यहां लगाया जाए, तो उसमें से कैसे पते फूटेंगे? किस तरह के फूल लगने की संभावना है? और उसको सुरक्षित रखने, फलता–फूलता रखने के लिए क्या–क्या उपक्रम करने होंगे? ये तमाम बहसें उसमें से निकल सकती हैं।

शिक्षा के मानक

इस प्रक्रिया को, इस परख को, शुरू करने के लिए मैं डिवी के उन चार मानकों को लेना चाहूंगा जो किसी भी शैक्षिक विचार की परख के लिए मुझे लगता है कि पर्याप्त हैं। क्योंकि वो शिक्षा की समग्रता को बहुत सरल एक चतुर्भुज में, सरल चौखटे में, डालकर दिखाने की क्षमता रखता है। और ये चार कोने हैं सीखने वाले यानिकि कि बच्चा, अध्यापक, परिवेश और विषयवस्तु। डिवी ने इनको चार सामान्य बातें कहा है जो कि शिक्षा के किसी भी दर्शन में, शिक्षा के किसी भी प्रस्ताव में पढ़ी जा सकती हैं या पढ़ी जानी चाहिए, अगर हम उनका विश्लेषण करना चाहते हैं। इनको ही अगर हम मानक के रूप में इस्तेमाल करें, कसौटी के रूप में इस्तेमाल करें और कसौटियों पर बुनियादी शिक्षा के प्रस्ताव, आज की संभावित रूपरेखा बना लें, तो मैं समझता हूं कि कुछ रोचक परिणाम बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए हमारे सामने आ सकते हैं।

एक आधारभूत सिद्धांत के रूप में माना जाता है कि बड़ा वो है जिसका बचपन समाप्त हो चुका है। और एक बच्चा वह है जो बड़ा नहीं हुआ हो। दोनों में एक प्रमुख फर्क यह है कि बड़ा वो जो जिम्मेदारियों से घिरा हो, जो चिंता कर सकता हो, और बच्चा वो जो जिम्मेदारियों से मुक्त हो। सब चिंताओं से दूर हो।

बच्चा (लड़का या लड़की)

सबसे पहले बच्चे की चर्चा करते हैं। सीखने में प्राथमिक स्तर पर चर्चा कर रहे हैं तो बच्चे की ही चर्चा करें। जब मैं कहता हूं मनोविज्ञान से रचा गया बच्चा। तो आशय है कि मनोविज्ञान ने जिस तरह से बच्चे की खोज की है सारी दुनिया में जिस तरह से उस पर शोध किया है, उस शोध के परिणाम स्वरूप एक बच्चे का प्रारूप, एक मॉडल प्रारूप जन्मा है, जिसमें कुछ विशेषताएं प्रमुख हो गई, उन विशेषताओं को हम इतनी सहजता से आत्मसात कर चुके हैं कि जब हम बात करते हैं कि 'बच्चा' तो हमारे मन में वो प्रमुख विशेषताएं एकदम, एक विश्वास के स्तर पर उभर आती हैं। कौन सी विशेषताएं एक तो यह कि बच्चा उस प्राणी का नाम है जो एकदम स्वतंत्र हो। स्वतंत्र यानि इतना ज्यादा आज़ाद कि वह किसी भी जिम्मेदारी से दूर हो, यानि जिम्मेदारी और बचपन इन दोनों के बीच अंतर्विरोध है। इस मान्यता के आधार पर ही बच्चे की छवि आज हमारे मन में बन गई। अगर ऐसा बचपन जीया जा रहा है जिसमें कुछ जिम्मेदारियां बचपन से ही हैं तो उसको सही बचपन या असली बचपन मानने से हम सब कतराते हैं। मैं भी कतराता हूं, क्योंकि हमारे मन में यह छवि बनी हुई है कि बचपन तो वह है जिसमें जिम्मेदारी नहीं हो, यह तो खेलने खाने का, उन्मुक्त होने का वक्त है। यह तो ऐसा वक्त है जब हम सब तरह खोए हुए हों।

दरअसल सिर्फ मनोविज्ञान पर इस छवि को गढ़ देने का श्रेय देना सही नहीं है। इस छवि को गढ़ने के पीछे पूरा एक इतिहास है, विशेषकर आधुनिक यूरोप का इतिहास। खासतौर से यूरोप के औद्योगिक इतिहास को यहां याद रख लेना जरूरी है। पिछले 300 वर्षों में यूरोप का समाज जिन–जिन अनुभवों

से गुजरा है, उन अनुभवों से गुजर कर ही उसने बचपन की एक छवि बनाई है। इसमें बच्चे और बड़े के बीच एक द्वैत है। एक आधारभूत सिद्धांत के रूप में माना जाता है कि बड़ा वो है जिसका बचपन समाप्त हो चुका है। और एक बच्चा वह है जो बड़ा नहीं हुआ हो। दोनों में एक प्रमुख फर्क यह है कि बड़ा वो जो जिम्मेदारियों से घिरा हो, जो चिंता कर सकता हो, और बच्चा वो जो जिम्मेदारियों से मुक्त हो। सब चिंताओं से दूर हो। इन दोनों के बीच एक स्पष्ट टकराव है और इस टकराव को मनोविज्ञान की भाषा में संधि–काल कहा जाता है।

बाल केन्द्रित शिक्षा का आशय अन्त में यह निकला कि बच्चे की प्रकृति के अनुरूप शिक्षा को समन्वित करना। ये तमाम विचार आज यहां इसलिए बता देना जरूरी है कि बुनियादी शिक्षा के प्रस्ताव में इन सभी विचारों का व्यतिक्रम निहित है। बुनियादी शिक्षा के प्रस्ताव में, किसी भी तरह से उस को देखेंगे तो यह लगेगा कि यह प्रस्ताव बच्चे व बड़े के बीच में द्वैत स्वीकार नहीं करता। यह प्रस्ताव बच्चे और उसके समाज के बीच द्वैत स्वीकार नहीं करता। इसलिए यह उन तमाम चीजों को दूर रखने की वकालत नहीं करता या यह संभव नहीं है इस विचार में। उन तमाम चीजों को दूर रखने की बात, जो बाल–केन्द्रित शिक्षा की आधुनिक मनोविज्ञान सम्मत अवधारणा में निहित है। खास तौर से जिस मुद्दे को लेकर सबसे ज्यादा झंझट बुनियादी शिक्षा का नाम सुनते ही शुरू हो जाता है वो झंझट है जिम्मेदारी। और खास तौर से किसी चीज़ को इस तरह से बनाना जिसका समाज में कोई मूल्य हो, कोई मूल्य समाज के अर्थतन्त्र में आंका जा सके, इस तरह से बनाकर संतुष्ट महसूस करना। इस बात की जिम्मेदारी को बुनियादी शिक्षा के प्रस्ताव से अलग करना संभव नहीं हैं बाल–मजदूरी को लेकर आज जो बहस देश में चल रही है, उस बहस के संदर्भ में बुनियादी शिक्षा का प्रस्ताव एक ऐसा आयाम एकाएक हमारे सामने उपस्थित करता है जिसको देखकर यकायक आप चल रही बहस से बुनियादी शिक्षा के प्रस्ताव की संगति एकदम से निहित है, भले ही हम इस नीति को अभी पूरी तरह से इस्तेमाल न कर सके हों। इस प्रस्ताव में यह निश्चित रूप से निहित है कि बच्चों को कोई काम न दिया जाए, ऐसा काम न उनसे कराया जाए जिसमें कोई जिम्मेदारी हो। इसलिए उन तमाम हस्त–कौशलों का, खेती से जुड़े हुए तमाम कामों का बच्चों से द्वैत है। सही बचपन तो वह हो गया जिसमें यह सब नहीं करना पड़े। चाहे वह बकरी की, गाय–भैंस की देखभाल हो, चाहे वो इधर से उधर सामान ले जाना हो। चाहे वह छोटे बच्चों की देखभाल हो, या वो घर में किया जाने वाला काम खुद करके सीखने का मामला हो। चाहे वो रोटी पकाने का हो, चाहे कोई चीज रंगने का हो, कोई चीज बुनने का हो, इन चीजों से बच्चों को दूर रखना है। तब उसकी शिक्षा ठीक तरह से होगी।

मैं एक छोटा सा अंदाज आपको दे दूं। यह जो स्कूल (पढ़ाई) छोड़ देने वाला आंकड़ा है, वह तो आपको अच्छी तरह से पता ही होगा कि हमारे देश में कितने बच्चे स्कूल बचपन में छोड़ देते हैं प्राथमिक स्तर पर व माध्यमिक स्तर पर, मैं एक और ही छोटा आंकड़ा आपको देना चाहता हूँ जिससे पता लगता है कि महत्वाकांक्षा को काबू में रखने का कितना बड़ा उद्यम, एक सामाजिक उद्यम, हमारी शिक्षा व्यवस्था कर रही है।

बच्चे की सफलता व विफलता

ऐसे ही सफलता और विफलता जैसे मुद्दे हैं

जिनको लेकर स्कूल हमें समाजीकृत करता है कि हम अपने को इस समाज में एक स्तर बनाकर मान लें। वैसे सबके लिए अवसर समान है लेकिन हम अन्य स्तरों पर जाने में विफल हैं। इसलिए विफलता की सूचना देना और इस तरह देना कि बच्चे को अपनी विफलता का बोध हो जाए, आधुनिक शिक्षा का एक बड़ा महत्वपूर्ण विवाद है। सबको कहीं ना कहीं महसूस हो कि हम यहां आकर विफल हो गए, यह विफलता बांटने की प्रक्रिया होती है जिसको बचपन में हमें सीख लेना होता है। वरना आधुनिक समाज चल नहीं सकता, जैसा कि समाज शास्त्री कहते हैं अगर सबकी महत्वाकांक्षा पूरी तरह से उद्दाम रूप लेने के लिए हो जाए तो समाज में अराजकता हो जायेगी। इसलिए महत्वाकांक्षा को ठंडी हवा से थोड़ी ठंडा कर देने का काम स्कूल करता है। वो जिस पैमाने पर करता है इसका अंदाज आपको होगा। मैं एक छोटा सा अंदाज आपको दे दूं। यह जो स्कूल (पढ़ाई) छोड़ देने वाला आंकड़ा है, वह तो आपको अच्छी तरह से पता ही होगा कि हमारे देश में कितने बच्चे स्कूल बचपन में छोड़ देते हैं प्राथमिक स्तर पर व माध्यमिक स्तर पर, मैं एक और ही छोटा आंकड़ा आपको देना चाहता हूँ जिससे पता लगता है कि महत्वाकांक्षा को काबू में रखने का कितना बड़ा उद्यम, एक सामाजिक उद्यम, हमारी शिक्षा व्यवस्था कर रही है। कक्षा 10 व 12 में किस पैमाने पर बच्चों की छंटाई होती है उसका एक हल्का सा अंदाजा लग सकता है। अगर देश भर में कक्षा 10 में बैठने वाले कुल बच्चों की संख्या जोड़ लें। 1990 में यह संख्या लगभग 88 लाख थी। इस संख्या में से 41 लाख बच्चे उस वर्ष की परीक्षा में पास हुए, यानि 88 में से 41 लाख, शेष को घोषित किया गया कि वो दसवीं के बाद नहीं जा सकते। फिर जो बच्चे 41 लाख थे, उनमें से 2 साल बाद 37 लाख 12 वीं की परीक्षा में बैठे। उनमें से 17.7 लाख उतीर्ण हुए। अब आप देखिए कि कितना कमाल का जादू है इस शिक्षा में, दो साल में 88 लाख में से 17 लाख को छोड़ती है कि तुम आगे जाओ और बाकी को अहसास दिला देती है कि उनके साथ किसी ने अन्याय नहीं किया। उन्होंने खुद अपने साथ अन्याय किया है कि वो फेल हो गए हैं और आगे जाने लायक नहीं है। यानि 88 लाख की जगह अब केवल 17 लाख को हमें आगे की शिक्षा देनी होती है। बाकी सबको विफलता का बोध इस अहसास के साथ हो जाता है कि हम इसी के लायक थे। ये सफलता और विफलता का बोध इस अहसास के साथ हो जाता है कि हम इसी के लायक थे। ये सफलता और विफलता में समायोजित होने का सिलसिला है। बुनियादी शिक्षा का विचार इस पर काफी चोट करता है। वहां जो मामला है वह कुशलता का है, सफलता या असफलता का नहीं। आप किसी चीज को बना कर देख सकते हैं कि मैंने ये चीज बनाई, उसमें अच्छाइयां और बुराइयां हैं। ये तो हर तरफ होती है, उनका मूल्यांकन भी किया जाता है। ये मैंने बनाई और जैसी भी बनाई, मेरे हाथों से बनी हुई है, चाहे ये एक कशीदा हो जो मैंने तकिये के गिलाफ का काढ़ा है। या यह एक छोटा सा रूमाल है जिस पर मैने तुरपन की है या ये रोटी

अगर स्कूल में सफाई की जाए, शौचालय बनाए रखना है, एक पानी की टंकी है या स्कूल में पानी नहीं है तो पानी का इंतजाम करना, ये तमाम काम छोटे काम हैं, परंतु जिनको लेकर आज की शिक्षा व्यवस्था इस तरह हाथ पर हाथ रखे बैठ चुकी है। आपको मालूम होगा, आजाद भारतीय स्कूल, किस तरह स्कूल चलाने के बुनियादी काम को करता है।

है जो मैने बनाई है, कच्ची है पक्की है, जो भी हो, पर मेरी यह एक प्रतिछवि है। इस बात का संतोष इस विचार में ही निहित है और इसलिए सफलता और विफलता को ही स्पष्टता से बांटने की प्रक्रिया इस शिक्षा में दिखाई ही नही जा सकती।

शिक्षक

ये बात बच्चे के संदर्भ में कहकर अब मैं अध्यापक की बात करूंगा। एक अध्यापक को बुनियादी शिक्षा के विचार में देखें तो क्या दिखाई देगा? बुनियादी शिक्षा के बारे में जो प्रमुख विचार निहित हैं उसमें इस बात का अहसास कर सकते हैं कि जिस तरह की कुशलता की हम बच्चे से अपेक्षा कर रहे हैं, जिस तरह की जिम्मेदारी में मानकर चल रहे हैं कि वह पहले से ही निबद्ध है और जो उसके लिए उचित है, संभव है, कुछ गलत नहीं है जिम्मेदारी देना। वह कोई चीज अपने हाथ से बनाए जो उसके परिवेश के कौशल से जुड़े। किसी कौशल को सीखे, उसमें दक्षता हासिल करे और इस दक्षता की जो साधन–सम्पन्नता महसूस होती है कि मैं यह कर सकता हूँ, मैने यह काम खुद किया। इन तमाम गुणों को अध्यापक के संदर्भ में भी रखकर देखना होगा। तभी हम ऐसे अध्यापक की संकल्पना कर सकते हैं जो बुनियादी शिक्षा के विचार का इस्तेमाल करने वाले स्कूल में पढ़ा सके। उसको अपनी साधन–सम्पन्नता का बोध हो कि मैं कर सकता हूँ और मैं (जोर देकर) कर सकता हूँ। इन दोनों में ही स्वावलंबन विचार के रूप में, केन्द्रीय मूल्य के रूप में, बहुत गहराई से विद्यमान है कि मैं कर सकता हूँ। मुझे किसी की दरकार नहीं है कि यह काम तो मैं कर सकता हूँ, यानि कि मैं इसमें इतनी महारत हासिल कर चुका हूँ कि मुझे इसे करने में और गलती दिखाने में कोई संकोच नहीं है। वो काम क्या है, उसकी बात हो सकती है कि काम कौन कर सकता है। यद्यपि बुनियादी शिक्षा के मूल प्रस्ताव में काम को मुख्यतः हस्त कौशल के रूप में ही परिभाषित किया गया है। फिर भी कोई कारण नहीं बनता कि हम काम को एक ज्यादा बड़े संदर्भ में परिभाषित करें। क्योंकि आखिर बुनियादी शिक्षा का विचार मूलतः जीवन के काम से संबंधित है। काम, काम जो जीवन जीने में मदद करते हैं। वे तमाम काम किए बिना, नियमित रूप से दक्षतापूर्वक किए बिना, जिंदगी को जीया नहीं जा सकता था। जिम्मेदारी को कोई वक्त दिया जा सकता है, ऐसे कामों में शुरू से ही बच्चों को शामिल रखने का विचार बुनियादी शिक्षा में होता है। इसलिए उन कामों की परिभाषा हम खुली तबियत से कर सकते हैं। अगर स्कूल में सफाई की जाए, शौचालय बनाए रखना है, एक पानी की टंकी है या स्कूल में पानी नहीं है तो पानी का इंतजाम करना, ये तमाम काम छोटे काम हैं, परंतु जिनको लेकर आज की शिक्षा व्यवस्था इस तरह हाथ पर हाथ रखे बैठ चुकी है। आपको मालूम होगा, आजाद भारतीय स्कूल, किस तरह स्कूल चलाने के बुनियादी काम को करता है।

परिवेश

अब आते हैं उन दो बचे हुए बिंदुओं पर जो सबसे ज्यादा संश्लिष्ट हैं और आज की दुनिया में गांधी के दर्शन पर आधारित किसी भी विचार को रुपाने में सबसे ज्यादा बौद्धिक श्रम की मांग करते हैं। और वो बिन्दु है– परिवेश और विषय वस्तु। हम परिवेश को किस तरह नियोजित करें और शिक्षा की विषय वस्तु क्या हो? ये दोनों ही सवाल पहले वाले दोनों सवालों की तुलना में ज्यादा जटिल हैं। अव्वल तो इसलिए कि बुनियादी शिक्षा का प्रस्ताव जिस भी रूप में हमारे सामने 40 के दशक में आया और 50 व 60 के दशक में अपनाया गया, इस इतिहास को पढ़कर आप इस तारीख में परिवेश को और विषयवस्तु को समझने के लिये पर्याप्त जानकारी नहीं प्राप्त कर सकते। आज की दुनिया में इन तमाम चीजों को किस तरह परिभाषित करें? मैं तो सबसे ज्यादा चिंतित विषय वस्तु के बहुत से मामूली

मदृदों को लेकर हो जाता हूँ। हमने जो यहां चर्चा छेड़ी है कहीं ज्यादा गहरी है। मैं स्वास्थ्य को लेकर इस विषय वस्तु में बहुत ज्यादा परेशान हो जाता हूँ। जब मैं देखता हूँ कक्षाओं में अधिकांश लोग खांस रहे हैं और हम सब खांसते हुए शिक्षक बच्चों को कैसे स्वस्थ रखेंगे। यह राष्ट्रीय स्तर का बिंदु है। आप इस समय दिल्ली का अखबार पढ़े तो पाएंगे कि कई स्तरों पर फेफड़ों के जुड़े हुए और छोटे–बड़े रोग ही दिल्ली नगर में स्वास्थ्य की चिंताओं के केन्द्र हैं। भला हो प्लेग का, जब वह आता है तो बड़ी चर्चा का विषय बनता है। वरना देखिए स्वास्थ्य की चर्चा का विषय ही खांसी है। ये खांसी जुकाम जैसे हमारे सामान्य जीवन के अंग से बन गए है और इस हद तक बन गए हैं कि इन्हें अस्वास्थ्यजनक नहीं मानते। अगर ऐसी स्थिति में शिक्षा की विषय वस्तु में स्वास्थ्य जैसे विषय को रखना है तो उसके लिए शिक्षक कैसा होगा? वह किस प्रकार से अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित रखेगा कि वो एक आधे घंटे बिना खांसे बैठ सके। तो यह बात मुझे बहुत ठीक–ठीक और बहुत ही जटिल लगती है क्योंकि ये संभव नहीं लगता। तो इस खांसती हुई दुनिया में ही हमें बुनियादी शिक्षा का पौधा रोपना होगा और उम्मीद करना होगा कि इस पौधे में से भी फल निकलेगा। जिसको ख कर के हम सभी की खांसी दूर होगी। तब इस पौधे को यहां रोपेंगे अथवा आप कोई पौधा बताइए।

विषय वस्तु तो वह चीज है, जो दी गई है और शिक्षक को उसे अपनी कुशलता से प्रदर्शित करना है। शिक्षक होने का अर्थ है, उन कौशलों का प्रयोग करना जिनकी मदद से दी गई विषयवस्तु को बच्चों को ग्राहय बनाया जा सके।

विषय–वस्तु

विषय–वस्तु की मीमांसा परिवेश के संदर्भ में करनी होगी, विषय–वस्तु आज जिस तरह हमारे सामने है, पाठ्यक्रम की कल्पना बहुत ही मुश्किल हो गई है। अगर आप पिछले 30–35 वर्षो में अपने शिक्षकीय जीवन का ही जायजा लेना शुरू करें, तो आप पाएंगे कि विषय वस्तु को एक मूल रूप में मान लेने का माहौल रह चुका है।

विषय वस्तु तो वह चीज है, जो दी गई है और शिक्षक को उसे अपनी कुशलता से प्रदर्शित करना है। शिक्षक होने का अर्थ है, उन कौशलों का प्रयोग करना जिनकी मदद से दी गई विषयवस्तु को बच्चों को ग्राहय बनाया जा सके। उस विषय वस्तु को जन्म देना शिक्षक का कार्य नहीं है। यद्यपि इस सवाल पर बहुत विचार किया गया है। यदि आप कोठारी आयोग से लगाकर यशपाल समिति तक जो समितियां बनी है उन सभी का निचोड़ इकट्ठा करना चाहें तो निचोड़ में कहीं–कहीं ऐसे तत्व निकल आएंगे कि शिक्षक का भी ऐसा जिम्मा है। कुछ लोगों ने पहचाना है कि विषय वस्तु को अपने ढंग से रचे लेकिन कुल मिलाकर जो बात बनी है वो बात यहीं जाकर ठहरी है कि विषय वस्तु को इतना तोड़ मोड़ कर प्रस्तुत करो कि साधारण से साधारण शिक्षक भी यह समझ जाए कि मैं यह बता रहा हूँ वो बताना सारे देश में एक जैसा हो। एक जैसी बात हो रही है देश में, अधिकांश प्रान्तों में, पाठ्यपुस्तकें एक सी मान ली और पाठ्यपुस्तकों से ज्यादा भी इन स्तरों की बात सुनी होगी। आप शायद इन स्तरों के निर्माता हैं। मुझे यहां आकर के अपनी सुरक्षा जो न्यूनतम अधिगम स्तर हैं, जो देश से न्यूनतम की अपेक्षा कर रहे हैं तो हमने जो अपना एक अरमान बनाया है वो एक महानतम का नहीं, न्यूनतम का है। और वो इस तरह से हमने बनाया है कि उसमें हरेक विषय को छोटे–छोटे व्यवहारों मे

बार–बार करके इस हद तक बांट दिया जाये कि वे इकट्ठा हो ही नहीं सकें। आपके यहां से एक कवि थे दिवंगत मणि मधुकर। उन्होंने उसके लिए एक शीर्षक दिया था, इसी के लिए दिया था या अपनी कल्पना से आगे आने वाली दुनिया के लिए दिया था। आपको तो ध्यान होगा ही उनका काव्य संग्रह ''खण्ड खण्ड पाखण्ड पर्व''। यह एक काव्य का शीर्षक है, ये जो व्यवहारगत न्यूनतम अधिगम स्तरों का प्रस्ताव है, मुझे लगता है इसका शीर्षक आप मणि मधुकर से ले लेते तो साहित्यिक सौंदर्य बोध भी इस प्रस्ताव में नजर आता। ऐसी चीजें बहुत मुश्किल से पढ़ी जाती हैं, उनकी पठनीयता एक समस्या है मेरे ख्याल से। पूरे का पूरा सवाल है विषय वस्तु का, शिक्षा की विषय वस्तु क्या हो सकती है? अगर उसे परिवेश से लें तो उसकी क्या परिभाषा की जाए? जो परिवेश की सीमाओं के रहते हुए भी संभावनाओं के दरवाजे खुले रखती हो। ये बड़े सुंदर सवाल के रूप में हमारे सामने हैं। इस सवाल पर विचार करें तो एकदम आरंभिक सवाल पर लौटने का आपका मन होगा, जो इस विचार में ही अर्थात प्रस्ताव के शीर्षक में ही निहित है।

आज का विश्वग्राम

'विश्वग्राम' बना, ये क्या है? कैसा विश्वग्राम है जिसमें एक देश की मुद्रा हमारे देश की मुद्रा से 70 गुना अधिक है। जिसमें एक आदमी एक जगह श्रम कर रहा है, वैसा ही श्रम एक आदमी 5 हजार मील दूर कर रहा है। इस श्रम के मूल्यांकन के बीच इतना बड़ा फासला है कि उस एक आदमी के 100 घंटों का श्रम, दूसरे वाले के एक मिनिट के श्रम के बराबर है। यह कैसा विश्वग्राम है? विश्वग्राम कहने वाले लोगों से ऐसे सवाल पूछना पिछले दो सौ सालों से मुश्किल रहा है। पहली बार यह सवाल हां... पूंजी का विकास हो सकता है जब पूंजी भी पूरी तरह मुक्त हो गई है जो राजस्थान में आकर हीरे–जवाहरात खरीद सकती है और कहीं का भी ठेका ले सकती है। लेकिन श्रम मुक्त नहीं हुआ। श्रम तो अपने–अपने देश की सीमाओं से बंधा हुआ है और हिसाब से इधर से उधर जाने दिया जाता है और बकायदे लौटाया जाता है। विश्व में श्रम का अलग अलग मूल्यांकन होता है। इस हद तक अलग होता है कि एक देश का श्रम दूसरे देश के श्रम को शाोषण और उत्पीड़न में बदल देता है। ऐसे में विश्वग्राम की परिकल्पना की बहुत निर्मम होकर परीक्षा करनी होगी और तमाम सूचना तंत्र जो हमसे कहता है कि अब अपने अनुभव से हाथ से कोई चीज बनाकर, अपने आसपास के पेड़ का परीक्षण करके, ज्ञान पाने की आवश्यकता नहीं है, अब तो हर ज्ञान कंप्यूटर से उपलब्ध है, हर ज्ञान उधर से आ गया है। यह ज्ञान है या कुछ और है उस पर सोचना है।

कैसा विश्वग्राम है जिसमें एक देश की मुद्रा हमारे देश की मुद्रा से 70 गुना अधिक है। जिसमें एक आदमी एक जगह श्रम कर रहा है, वैसा ही श्रम एक आदमी 5 हजार मील दूर कर रहा है। इस श्रम के मूल्यांकन के बीच इतना बड़ा फासला है कि उस एक आदमी के 100 घंटों का श्रम, दूसरे वाले के एक मिनिट के श्रम के बराबर है। यह कैसा विश्वग्राम है?

बुनियादी विचार

बुनियादी शिक्षा के संदर्भ में मामला बहुत आसान है क्योंकि वहां मामला पूरी तरह से अनुभव का है। वे अनुभव जो बच्चों को सामूहिक स्तर पर होते हैं। अगर पेड़ का ज्ञान पाना है तो अपने स्कूल के इर्द–गिर्द के उगे पेड़ों का विभिन्न मौसमों में परीक्षण करके पाया जाएगा, वह बुनियादी शिक्षा के विचार के संदर्भ में वैध ठहराया जा सकता है। शेष ज्ञान को एक विशिष्ट तरह की सूचना माना जा सकता

है, जिसका कोई संबंध समाज से, व्यक्तित्व से नहीं बन सकता।

बुनियादी शिक्षा का विचार किसी संदर्भ में बुनियादी है तो वह समाज रचना के संदर्भ में ही है। व्यक्तित्व के संदर्भ में ही नहीं, समाज की पुनर्रचना के संदर्भ में भी है। गांधी का जीवन और विचार एक निषेध है उस दुनिया का, जो उपनिवेशवाद के जरिए बनी। वह बहुत बड़ी असहमति थी। और असहमति की शिक्षा अगर बुनियादी शिक्षा नहीं देती, तो वह बुनियादी शिक्षा नहीं कहला सकती। शायद यह बहुत बड़ी कमी रह गयी जो कि आजादी के बाद, जो पहले बीस–तीस वर्षों में बुनियादी शिक्षा बनी, उसमें यह कमी रह गयी, क्योंकि उसमें असहमति की जगह नहीं थी। असहमति का कोई स्थान ही नहीं रहने दिया गया। बल्कि राज और समाज के बीच असहमति के जो मुद्दे पैदा हो सकते थे उन्हें पहले ही पोंछ दिया गया, मिटा दिया गया।

बुनियादी शिक्षा में समाज की स्वायतता

एक बहस यहां से शुरू हो सकती है कि बुनियादी शिक्षा के संदर्भ में राज की क्या भूमिका हो? बुनियादी शिक्षा अंततः मनुष्य के समाज की स्वायतता का बहुत ही तेज आवाज में किया गया उद्घोष है। किसी भी राज व्यवस्था को, समाज के साथ विनम्रतापूर्वक, आदरपूर्वक सामंजस्य करने की चुनौती है। इसलिए राजतंत्र से, राजतंत्र द्वारा लिए गए निर्णयों से निरंतर एक तरह का द्वन्द्वात्मक रिश्ता बनाने का विचार बुनियादी शिक्षा में अंतर्निहित है। अगर बुनियादी शिक्षा ऐसे बच्चों को जन्म नहीं दे पाती जो बनते हुए माहौल से असहमत हो सकते हैं तो जरूर उनकी बुनियादी शिक्षा में कोई बहुत बड़ी कमी है। ऐसी शंका करना हमेशा उचित है। ये जो दुनिया बन रही है, इसी दुनिया में जीने के लिए हमें आज की शिक्षा दीक्षित करती है। उनके साथ इस दुनिया को बदला नहीं जा सकता है, वह जैसी भी है, उसी में हमें जीना है। इसमें जीने के साधन, जीने के लिए व्यक्तित्व के गुण हमें प्राप्त करने हैं। अगर इस दुनिया में जी हुजूरी काम आती है तो जी हुजूरी सीखनी है, प्रतियोगिता काम आती है तो प्रतियोगिता सीखनी है। आज की शिक्षा के जरिए ये संसार बदला नहीं जा सकता। बुनियादी शिक्षा को अगर गांधी की परपंरा में रखना अनिवार्य है तो असहमति का अधिकार मनुष्य के लगभग धर्म के स्तर पर स्वीकार करना होगा। जो दुनिया बन रही है मैं उसी दुनिया में जीने के लिए अभिशप्त नहीं हूं, मैं इस दुनिया को अपने ढंग से बना सकता हूँ। अपने जीवन काल में, जिस हद तक अपने ढंग से मेरा जीवन इस दुनिया को बदलेगा, उस हद तक बदल सकता हूं। यह निषेध कोई सचेत निषेध नहीं है, यह सहज जीवन जीते हुए निषेध है। इस पूरी परंपरा से यदि इस विचार को लेना है, तो इस विचार के इस वृहत्तर पहलू को भुला देना बहुत ही गलत और अन्यायपूर्ण होगा। और हम उसी विफलता के किनारे पहुंच जाएंगे, जहां 1966 में बुनियादी शिक्षा को कोठारी कमीशन ने पाया था और इसको दफनाने का प्रयत्न किया था। यह श्रेय आप कोठारी आयोग को दे सकते हैं कि उसने इस प्रयोग को अंतिम रूप से दफन किया। आज अगर हम इस बीज को फिर से रोपना चाहते हैं तो इन सब जिम्मेदारियों को समझना होगा और अपने बीच बातचीत और बहस का विषय बनाना होगा।

(प्रो. कृष्ण कुमार – दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में अध्यापन। शिक्षा में सतत् लेखन। वर्तमान में एन.सी.ईआर.टी. के निदेशक हैं।**)**

सेमिनार से

काम और ज्ञान के रिश्ते को जोड़ने की दुविधा

कमल महेंद्रू

दिनांक 11–12 मार्च 2006 को विद्या भवन द्वारा आयोजित बुनियादी शिक्षा की प्रासंगिकता पर आयोजित सेमिनार में कमल महेंद्रू ने काम और ज्ञान के रिश्ते को बुनियादी शिक्षा के संदर्भ में रेखांकित किया है। बुनियादी शिक्षा के दायरे में काम ऐसा हो जो कि उत्पादन से जुड़ा हो। कमल महेंद्रू ने इस विडंबना को भी स्पष्ट तौर पर उजागर किया है कि कई सारी बुनियादी शालाओं में काम को एक कर्मकांड के रूप में देखा जाने लगा। यहां पाठ्यक्रम तो अन्य तथाकथित स्कूलों सा ही चलता है, केवल काम का एक कालखंड होता है। चूंकि बुनियादी शिक्षा में काम करवाना होता है इस कारण से बच्चों को किसी भी नीरस और अनुत्पदाक काम में लगा दिया जाता है।

कमल महेंद्रू इन विडंबनाओं को प्रस्तुत करते हुए इनके हल की बात भी करते हैं। उनके अनुसार वर्तमान शिक्षा की प्रांसगिकता को लेकर भी हमको बुनियादी शिक्षा में ही झांकना होगा। वर्तमान में जो राष्ट्रीय पाठ्यचर्या–2005 मसौदा तैयार किया गया है उसमें काम और ज्ञान के रिश्ते की बात की गई है। उल्लेखनीय है कि अनिल सदगोपल ने सेमिनार में इस मसले पर अपनी बेबाक राय प्रस्तुत की थी जिसको बुनियादी शिक्षा के अंक–11 में प्रकाशित किया है। यह लेख इसी कड़ी का एक हिस्सा है।

मुझे लगता है बुनियादी तालीम की दुविधाओं की बात करने से बात पुरी नहीं होगी। मैंने अपने दिमाग में विश्लेषण करने की कोशिश की कि आखिर बुनियादी शिक्षा के वो क्या मूल विचार हैं जिनको हम पकड़ सकें और समझ कर उसकी जड़ तक पहूंच सकें। तभी उनसे जूझने का रास्ता समझ में आएगा। मैने शिक्षा के क्षेत्र में किशोर भारती संस्था में 70 के दशक में जब काम करना शुरू किया था तो मुझे याद है कि कोई भी जब नवाचार का काम करने जाता है तो उसके लिए बुनियादी शिक्षा के विचारों को जानना और समझना एक अनिवार्य चीज़ होती थी। आपको अगर कुछ और करना है तो पहले आप बुनियादी शिक्षा क्या है, उसके अनुभव क्या है, उसका किस–किस तरह उपयोग हुआ है ये जानकर आइए।

मेरे ख्याल में इस पूरी विचारधारा में कुछ दम है तभी इतने वर्षों बाद भी फिर बुनियादी शिक्षा पर सेमिनार करने की, उस पर विचार करने की जरूरत हम सबको लगातार महसूस हो रही है। इसके दो कारण हैं– एक तो ये कि उस विचारधारा में दम है और दूसरा, हम उस विचार को फलिभूत नहीं कर पाए हैं। दोनों कारणों से हमको ये प्रक्रिया दोहरानी पड़ रही है।

बुनियादी शिक्षा की पूरी विचाराधारा को बहुत सरल कर दें तो इसमें दो शब्द हैं काम और शिक्षा। और इन दोनों के जुड़ाव को ढूंढ़ने का प्रयास करना है। अगर आप देखें तो ये सवाल और ये दुविधाएं हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी है। हाल का

नेशनल करिकुलर फ्रेमवर्क बनाने का जो पूरा प्रयास हुआ है उसमें भी काम व शिक्षा के संबंध को ढूंढ़ने की बड़ी कोशिश की गई है। तो हर बार हम कह देते हैं कि काम ओर शिक्षा को जोड़ना चाहिए। और फिर उसका हल ढूंढ़ने के लिए बुनियादी शिक्षा की विचाराधारा की ओर अग्रसर होते है कि शायद यहीं से हमें उसका उत्तर मिले। रोचक बात ये है कि हमको जो कमियां आज की शिक्षा व्यवस्था में लगती है उससे तो यही निष्कर्ष निकालते हैं कि काम और शिक्षा इन दोनों को जोड़ने से हल मिल सकता है। इसी का विश्लेषण अगर हम करके देखें तो हमारी जो न्यादिश शिक्षा की दुविधा है, काम और शिक्षा को जोड़ने की दुविधा है, और हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली की प्रांसगिकता के सवाल हैं, उन सब का उत्तर शायद इन दोनों में जाकर अटकता है या मिलता है।

काम और शिक्षा इन दो शब्दों को जितना कि मैं समझता हूं, आपके सामने प्रस्तुत करने की कोशिश कर रहा हूं। मेरी समझ ये है कि काम का मतलब आप कुछ भी काम कर रहे हो, नहीं है। बुनियादी शिक्षा के संदर्भ में भी नहीं है। स्पष्ट रूप से काम का मतलब उत्पादक श्रम से है। केवल हम बच्चों से दिन में एक घंटे तकली चलवा रहे हैं या बगीचे में निंदाई–गुढ़ाई करवा रहे हैं तो मेरी समझ में बुनियादी शिक्षा का काम का जो सिद्धांत है वो पूरा नहीं होता। काम को उत्पादक श्रम के संदर्भ में ही परिभाषित करना और उसके आधार पर शैक्षणिक क्रियाएं क्या करनी पड़ेगी, शिक्षक व्यवस्था क्या होनी पड़ेगी, ये करना बहुत जरूरी है। मैं ये बातें अपने कुछ अनुभव के आधार पर कर रहा हूं। मैंने कई जगह पर बुनियादी शिक्षा के प्रयोग देखे हैं। काम जिस रूप में वहां पर समझा गया और करवाया गया, उसकी निरर्थकता इतनी कि आप वहां जाएं तो आपको झकझोरती है कि काम तो यहां पर हो रहा है पर वो है एक दम निरर्थक। जो काम करवाया जाता है वो ना तो बच्चों में और न ही शिक्षकों में किसी प्रकार का उत्साह पैदा कर पा रहा है। और शिक्षा से तो उसका कोई लेना देना रहता ही नहीं है। मेरी समझ में बुनियादी शिक्षा के संदर्भ में काम को उत्पादक श्रम के रूप में ही परिभाषित करना बहुत जरूरी है ।

काम का मतलब आप कुछ भी काम कर रहे हो, नहीं है। बुनियादी शिक्षा के संदर्भ में भी नहीं है। स्पष्ट रूप से काम का मतलब उत्पादक श्रम से है। केवल हम बच्चों से दिन में एक घंटे तकली चलवा रहे हैं या बगीचे में निंदाई–गुढ़ाई करवा रहे हैं तो मेरी समझ में बुनियादी शिक्षा का काम का जो सिद्धांत है वो पूरा नहीं होता। काम को उत्पादक श्रम के संदर्भ में ही परिभाषित करना और उसके आधार पर शैक्षणिक क्रियाएं क्या करनी पड़ेगी, शिक्षक व्यवस्था क्या होनी पड़ेगी, ये करना बहुत जरूरी है।

अगर हम इस बात को मान लें कि काम का मतलब है उत्पादक श्रम तो उससे फिर दो बातें उठती है। एक तो ये कि आपके श्रम से कुछ उत्पादन होना चाहिए। और उत्पाद तभी होता है जब आप कहीं बाजार में ले जाकर उसका आदान–प्रदान कर सकें, बेच सकें। अपने श्रम को उत्पादक बनाने के लिए एक बहुत जरूरी हिस्सा हो जाता है बाजार से जुड़ना। स्कूली शिक्षा की प्रक्रिया में जो उत्पादक काम करवा रहे हैं, काम से जो उत्पादन करवा रहे हैं वो उत्पादन कहीं बाजार से जुड़ना चाहिए। और अगर वो नहीं जुडता है तो हम फिर उस दुविधा में अटक जाते हैं कि हमारा काम निरर्थक है। और उस कारण से वह काम उत्साह नहीं दे पाता है।

दूसरा हिस्सा है उत्पादक श्रम से जो आजिविका से जुड़ता है। उत्पादक श्रम बाजार से जुड़ना और आजीविका से ये सभी एक दूसरे के पूरक हैं। ऐसा श्रम जो उत्पादक श्रम हो और हम विद्यार्थी को उसके भावी जीवन में इस प्रकार की क्षमता दे सकें कि वो अपनी और अपने परिवार की आजीविका का भरण–पोषण कर सकें। फिर बात यहां पर खत्म नहीं होती कि इस बात को मानने से जो दुविधाएं पैदा होती है जो केवल बुनियादी शिक्षा के अंदरुनी तर्कों से नहीं उभरती हैं, वो बाहरी दुनिया के तर्क से भी उभरती है। और उस बाहरी दुनिया की परिस्थिति से फिर बुनियादी शिक्षा की अवधारणा को और उसके क्रियान्वयन से जूझना पड़ेगा। पहली तो है बाज़ार की दुविधा। अगर आपका श्रम उत्पादक श्रम होगा तो बाज़ार में किस चीज़ का आदान–प्रदान हो सकेगा, कौन सी चीज़ बेंची जा सकेगी और समय के साथ उसमें क्या परिवर्तन होता चलेगा इस बात को हमको बुनियादी शिक्षा की अवधारणा और ढांचे में स्वीकारना पड़ेगा। तो ऐसा नहीं हो सकता की अगर आज से पचास–साठ–सत्तर साल पहले चरखे से सूत कातना उस समय उत्पादक श्रम की श्रेणी में आता था।

आज की परिस्थिति में, आज की टेक्नोलॉजी, आज की बाजार की आवश्यकता, आज के जीवन की जरूरतें उन सबका विश्लेषण करने की जरूरत है। और उस विश्लेषण के आधार पर काम को निर्धारित करना होगा।

आज की परिस्थिति में, आज की टेक्नोलॉजी, आज की बाजार की आवश्यकता, आज के जीवन की जरूरतें उन सबका विश्लेषण करने की जरूरत है। और उस विश्लेषण के आधार पर काम को निर्धारित करना होगा। हम किसको काम ओर शिक्षा को जोड़ने का आधार मानें? उस पर निरंतर गतिशील होना, परिवर्तन होना, मुझे लगता है कि बुनियादी शिक्षा को जीवित बनाए रखने के लिए बहुत जरूरी है। नहीं तो वो एक जड़ विचार और एक जड़ व्यवस्था बन कर रह जाती है। दूसरी दुविधा हमारी अर्थव्यवस्था और हमारे समाज की बहुत बुनियादी बात पर चोट करती है और वो है श्रम का मूल्य।

काम को हम उत्पादक श्रम के रूप में समझें ओर उत्पादक श्रम को बाज़ार और आजीविका से जोड़े बिना नहीं समझा जा सकता। इन दोनों को जोड़ने की जो बुनियादी दुविधा है वो बाज़ार और उसके बदलते रूप से उभर कर आती है। दूसरा, श्रम के मूल्य की जो विसंगती है उससे ये दुविधा उभर कर आती है।

हमारे देश, हमारे समाज में किसी कारण से शारीरिक श्रम से किया गया उत्पाद मूल्य दिमागी श्रम से किए गए उत्पाद से कम आंका जाता है। मतलब कोई ये कहें कि ये ईश्वरीय देन है या ऐसा ही होता है तो ऐसा जरूरी नहीं है। विश्व में और देश हैं जहां पर एक माली भी मध्यमवर्गीय जीवन जीता है क्योंकि उसको अपने माली के काम का जो मेहनताना मिलता है, उसके श्रम का जो मूल्य मिलता है वो उतना ही मिलता है जो एक स्कूली मास्टर को या बैंक के बाबू को या सरकारी अफसर को। एक बढ़ई को उसके श्रम का मूल्य उतना ही मिलता है, एक घर की पुताई करने वाले को उसके श्रम का मूल्य उतना ही मिलता है। किसान को उसके श्रम का मूल्य उतना ही मिलता है। ये हमारे देश और हमारे समाज की कमजोरी है कि वो शारीरिक श्रम को दिमागी श्रम से कम

आंकता है।

मेरी समझ में बुनियादी शिक्षा की विचाराधारा के पीछे वास्तव में हमारे समाज में जो झकझोरने की जरूरत थी, जरूरत है वो शक्ति चाहिए। वो शायद बुनियादी शिक्षा की विचारधारा से बनती है। और इस विचाराधारा को कहीं इस सामाजिक व्यवस्था पर कई सवाल उठाना पड़ेगा। ये बहुत बुनियादी विसंगती है कि शारीरिक श्रम करना आदर्श है। वहीं हमारा समाज जो है वो शारीरिक श्रम के मूल्य को बहुत कम आंकता है। तो इस दुविधा में जो आप शिक्षा दे रहे है, और समाज जो शिक्षा दे रहा है बच्चों को, उन दोनों बुनियादी दुविधाओं का और उस विरोधाभास का कहीं पर डटकर सामना करने की जरूरत होगी। और वो केवल बुनियादी शिक्षा के ढांचे में नहीं वरन हमारी पूरी अर्थव्यवस्था पर सवाल खड़े करने होंगे। हमारी श्रम नीति पर सवाल करने होंगे तभी बुनियादी शिक्षा समाज को बदलने के सपने की ओर बढ़ सकेगी।

मैं संक्षिप्त में दोहरा दूं, मुझे लगता है कि काम को हम उत्पादक श्रम के रूप में समझें ओर उत्पादक श्रम को बाज़ार और आजीविका से जोड़े बिना नहीं समझा जा सकता। इन दोनों को जोड़ने की जो बुनियादी दुविधा है वो बाज़ार और उसके बदलते रूप से उभर कर आती है। दूसरा, श्रम के मूल्य की जो विसंगती है उससे ये दुविधा उभर कर आती है। अब मैं दूसरे पहलू की ओर चलता हूं। मुझे लगता है कि मुख्य सवाल यही है कि काम और शिक्षा के बीच का जो संबंध है, वो हम बुनियादी शिक्षा में कहीं बहुत प्रखर रूप से परिभाषित नहीं कर पाए हैं।

मैंने कई बुनियादी शिक्षा के प्रयोग देखे। उसमें जो परिभाषित किया गया है और कहीं पर काम और शिक्षा का जुड़ाव है वो स्कूलों की दिनचर्या में ही टूट जाता है। बच्चे कक्षा में तो वही शिक्षण पद्धति, वो ही पाठ्य पुस्तकें उसी शिक्षण पद्धति से पढ़ रहे होंगे जो कि एक सामान्य शाला में चल रहा होगा। और दिन में थोड़ा समय रखा गया होगा काम के लिए कि बुनियादी शिक्षा में काम भी करवाना है तो इस समय बच्चे काम करें और बच्चों की शिक्षा हो। मुझे लगता है कि ये काम और शिक्षा के बीच के जुड़ाव को एक जीवंत रूप से स्थापित करने में जो असमर्थता और एक दुविधा रही है उसने बुनियादी शिक्षा को बहुत कमजोर किया है।

मै बहुत सरल तथ्य आपके सामने प्रस्तावित करना चाहता हूं। दरअसल शिक्षा और पाठ्यचर्या की एक नई पुनर्रचना करने की जरूरत है। अगर हम काम और शिक्षा का जो संबंध है इसको ठोस रूप से स्थापित करना चाहते हैं तो मेरी समझ में वो केवल दुविधा ही नहीं वो सबसे बड़ी चुनौती है बुनियादी शिक्षा की। काम और शिक्षा का संबंध स्थापित करना जो हर कोई सरकारी दस्तावेज में इस वाक्यांश को पाएंगे। काम और शिक्षा का संबंध हमको स्थापित करना है। मै कहूंगा कि ये बुनियादी शिक्षा से लिया हुआ बहुत महत्वपूर्ण विचार है। तो काम और शिक्षा को जोड़ने वाली

दरअसल शिक्षा और पाठ्यचर्या की एक नई पुनर्रचना करने की जरूरत है। अगर हम काम और शिक्षा का जो संबंध है इसको ठोस रूप से स्थापित करना चाहते हैं तो मेरी समझ में वो केवल दुविधा ही नहीं वो सबसे बडी चुनौती है बुनियादी शिक्षा की। काम और शिक्षा का संबंध स्थापित करना जो हर कोई सरकारी दस्तावेज में इस वाक्यांश को पाएंगे। काम और शिक्षा का संबंध हमको स्थापित करना है।

पाठ्यचर्या की संरचना करना बहुत जरूरी हो गया है। मैं इसमें दो बातें और जोड़कर अपनी बात को यहीं समाप्त करूंगा। पहली चीज कि इसका मतलब ये बिल्कुल नहीं है कि हम एक अलग शिक्षा की बात कर रहे हैं। मैं कह रहा हूं कि ये नहीं कि गणित में ये पढ़ाना चाहिए, या विज्ञान के ये टॉपिक इस कक्षा में होने चाहिए, बल्कि जो सामान्य उद्देश्य गणित शिक्षण के, विज्ञान शिक्षण के, भाषा शिक्षण के, सामाजिक अध्ययन शिक्षण के और शिक्षा के जो प्रतिबंधित किए गए हैं इन राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में, मेरी समझ में उनको आधार बनाकर काम और शिक्षा को जोड़ने वाले का समन्वय स्थापित करने वाले पाठ्यचर्या का निर्माण करना संभव है।

मेरा विश्वास है कि इस तरह की पाठ्यचर्या की रचना की जा सकती है। और ये चुनौती बुनियादी शिक्षा के विचारों के पक्षधर लोगों का सिखानी पड़ेगी। दूसरी बात जो इससे उभरकर आती है वो ये कि जो हमारी मुख्यधारा की शिक्षा है, उसके जो सिद्धांत हैं उसके जो पेडॉगॉजी के सिद्धांत हैं, उसकी जो शिक्षण विधि के सिद्धांत हैं, उसकी जो विषय वस्तु के सिद्धांत है, हर डिसीप्लीन से लिए गए सिद्धांत हैं, उनको भी हमको काम और शिक्षा के ढांचे में शामिल करना होगा।

मै ये बातें कुछ तो अपने अनुभव से बोल रहा हूं और कुछ एक आशावादी दृष्टिकोण के साथ। मेरा विश्वास है कि इस तरह की पाठ्यचर्या की रचना की जा सकती है। और ये चुनौती बुनियादी शिक्षा के विचारों के पक्षधर लोगों का सिखानी पड़ेगी। दूसरी बात जो इससे उभरकर आती है वो ये कि जो हमारी मुख्यधारा की शिक्षा है, उसके जो सिद्धांत हैं उसके जो पेडॉगॉजी के सिद्धांत हैं, उसकी जो शिक्षण विधि के सिद्धांत हैं, उसकी जो विषय वस्तु विषय वस्तु के आधार से अलग बनेगी। उनको भी अपने में समाहित करना होगा। इसका मतलब ये है कि उदाहरण के तौर पर एक अच्छी गणित की शिक्षा क्या है और किस–किस स्तर पर क्या–क्या सिखाना जाना चाहिए, इसकी इतनी ही गहरी समझ हमको चाहिए। और हम काम के साथ कैसे जोड़कर पाठ्यक्रम का विकास करेंगे या पाठ्यचर्या बनाएंगे। ये चुनौतियां हमको स्वीकार करनी पड़ेगी।

मेरा सिर्फ ये कहना है कि इस चुनौती को स्वीकार करने का मतलब इसके कुछ विकल्प बनाकर प्रस्तुत करने पड़ेंगे। मैं ये मानता हूं कि अगर परंपरागत पाठ्यक्रम है तो उसको भी पढ़ाया जाए और साथ में काम भी हो सकता है तो वो मुझे लगता है कि शायद संभव नहीं है। क्योंकि पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम उस दृष्टि से रचा ही नहीं है। तो नये ढंग का पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम रचने की आवश्यकता होगी तब ये जो बुनियादी दुविधा जिसको आप सबने भी इंगित किया उससे हम पार पा सकेंगे।

(कमल महेन्द्रू – एकलव्य में कार्यरत।)

बुनियादी तालीम की दुविधाएं

रतन लाल भोजक एवं संजय कुमार शर्मा

महात्मा गांधी ने 1937 में बुनियादी शिक्षा आयोग का गठन करने की प्रेरणा डॉ. जाकिर हुसैन को दी जो 'वर्धा स्कीम' के नाम से भी जानी जाती है। महात्मा गांधी ने साबरमती आश्रम की स्थापना की, जहां से वे शिक्षा को व्यवहारिक धरातल पर स्थापित करना चाहते थे। यहां प्रतिदिन प्रातःकालीन प्रार्थना से इन संस्थाओं में शिक्षण कार्य प्रारम्भ होता था। यहां शिल्प कालाओं का शिक्षण, शारीरिक व्यायाम, बाल प्रतियोगिताओं एवं आध्यात्मिक जीवन को समुन्नत बनाने की शिक्षा दी जाती थी। गांधीजी की इस विचारधारा में कहीं भी आदर्शों एवं सिद्धांतों का अतिरेक नहीं था। वे स्पष्ट रूप से प्रयोगात्मक एवं स्वाभाविक प्रक्रिया द्वारा शिक्षा को आगे बढ़ाना चाहते थे। इस समय भारत पराधीन था और सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक, धार्मिक शोषण के साथ–साथ शैक्षिक एवं सांस्कृतिक पराभाव का शिकार भी हो रहा था। ऐसी स्थिति में महात्मा गांधी ने बुनियादी शिक्षा के माध्यम से भारतवर्ष में निर्धन एवं कमजोर बच्चों को नई तालीम के माध्यम से राष्ट्रीय विकास से जोड़ने का संकल्प किया। बुनियादी शिक्षा का उद्देश्य था–

- बच्चों में आत्मनिर्भरता
- जाति, वर्ग, वर्ण सबकी समान शिक्षा
- चारित्रिक विकास पर विशेष बल
- मन, बुद्धि, आत्मा, शरीर सब का विकास
- व्यक्त एवं समाज का उचित सम्बन्ध
- मानव सेवा में शिक्षा की सार्थकता
- आत्मविश्वास एवं आत्म निर्भरता
- ज्ञान एवं कर्म में उचित सम्बन्ध
- सत्य, अहिंसा, प्रेम, संगठन सब की शिक्षा
- सैद्धांतिक ज्ञान के साथ शिल्प शिक्षा

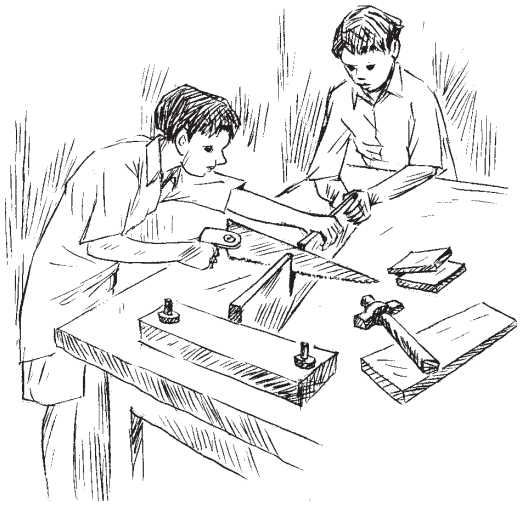

- मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उन्होंने सतत् प्रयास किया और वे जब तक जीवित थे इस शिक्षा में निरंतर प्रगति होती रही। इसकी कमियों एवं अवरोधों की समीक्षा होती रही किंतु सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ इस शिक्षा को भूला दिया गया। यह भी देखा जाने लगा कि स्वतन्त्रता के बाद भी भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में अंग्रेजी द्वारा बलात् थोपी गई शिक्षा ही अधिक प्रभावी हो रही है और भारतीय बच्चे अभी आंग्ल भाषा और उनकी शिक्षण प्रणालियों की ओर अग्रसर हो रहे हैं। दुर्भाग्य से तत्कालीन शिक्षा शास्त्री, समाज सुधारक एवं शिक्षाविद् इस कमी की ओर ध्यान न देकर अंग्रेजों के यशोगान में लगे हुए थे। अपने बच्चों के भविष्य में इन्हें दुर्बल भारत की तस्वीर नजर आ रही थी और बुनियादी शिक्षा की बुनियाद ही हिलती नज़र आने लगी। बुनियादी

शिक्षा के पहलू कुछ इस प्रकार हैं:

- सस्ती थी
- स्वाभाविक थी
- सरल एवं सहज थी
- मानवीय मूल्यों से जुड़ी हुई थी
- सामाजिक थी
- भारतीयकरण के प्रति सचेष्ट थी।

वह भी आज कृत्रिम एवं औपचारिकता के बोझ से दब गई है। बुनियादी शिक्षा संकल्पना भारत की आम जनता एवं परिस्थितियों के अनुकूल होते हुए भी 21वीं शताब्दी की चुनौतियों के सम्मुख इसकी क्रियान्विति में अनेक बाधाएं हैं। इनमें से कुछ मुख्य दुविधाओं का उल्लेख करने का प्रयास किया जा रहा है–

1. बदलती सामाजिक परिस्थितियों में भौतिकवादी दर्शन।
2. तीव्रगामी परिवर्तन।
3. बढ़ती हुई औद्योगिक एवं वैज्ञानिक प्रगति।
4. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चिंतन की बढ़ती अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा।
5. शिल्प एवं हस्तकलाओं का लोप एवं यन्त्र निर्माण की प्रक्रिया।
6. अर्थ संचय की दुषित मनोवृति में ईजाफा।
7. औद्योगीकरण के कारण हस्तशिल्प व्यर्थ होने लगे।
8. सरकारी नौकरियों में अंग्रेजी भाषी लोगों की तुलना में इनको कम महत्व दिया जाने लगा।
9. केवल सात–आठ वर्ष तक चली प्राईमरी तक शिक्षा प्राप्त छात्रों के लिए उच्च शिक्षा

हेतु कोई व्यवस्था नहीं थी।

10. हस्तशिल्प के कारीगर उनके निर्माण की प्रक्रिया को भुलने लगे।

11. उन्नत व विकसित विद्यालयों की तुलना में इन विद्यार्थियों को सुविधा एवं संसाधन कम थे।

उपरोक्त बाधाओं के अतिरिक्त कुछ दुविधाएं भी हैं जो हमारे देश में बुनियादी शिक्षा के विकास में रूकावट बनाए हुए हैं–

प्रचलित पाठ्यक्रम व उद्योग में समन्वय स्थापित न हो पाना

बुनियादी शिक्षा के मूल में हाथ के काम द्वारा शिक्षा दी जानी है। इन परिस्थितियों में निर्धारित पाठ्यक्रम का किसी एक उद्योग द्वारा पूरी तरह अध्यापन करना अत्यंत कठिन कार्य है। इस प्रकार से सात से चौदह वर्ष के बालकों को भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान सभी का उद्योग से समन्वय स्थापित करते हुए पाठ्यक्रम पूरा करना सम्भव नहीं हो पाता है, जो कि अत्यावश्यक है।

बुनियादी शिक्षा आधारित शिक्षक प्रशिक्षण न होना

बुनियादी शिक्षा संकल्पना आधारित विद्यालयों में जो अध्यापक शिक्षण कार्य हेतु नियुक्त किए जाते है उनके लिए कोई विशेष प्रशिक्षण व्यवस्था कभी नहीं की गई इसलिए उद्योग शिक्षक व पाठ्यक्रम शिक्षक अलग–अलग होते हैं, इसलिए समन्वय नहीं हो सका। विशिष्ट शिक्षक प्रशिक्षण न होना असफलता का कारण है।

एक अध्यापक एक कक्षा की अवधारणाा से अधिगम कार्य असफल रहा

बुनियादी शिक्षा संकल्पना आधारित विद्यालयों में एक कक्षा के विद्यार्थी एक ही अध्यापक से पारिवारिक रिश्ता बनाते हुए सभी विषयों का उद्योग के द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हैं। ऐसे में अध्यापक को उद्योग के साथ–साथ पाठ्यक्रमानुसार शिक्षण में भी दक्ष होना चाहिए जो कि सम्भव नहीं हो रहा है।

अभिभावकों में भ्रांति

बुनियादी विद्यालयों में अभिभावकों से निरन्तर सम्पर्क से पता चला कि इन विद्यालयों से सिर्फ उद्योग एवं हाथ से काम करना सिखाया जाता है। जो हमारे बच्चों के सुखद भविष्य के अनुरूप नहीं है इसलिए बुनियादी तालिम को बढ़ावा दिया जाना कठिन हो गया।

स्वपोषित स्कूल की संकल्पना का असफल होना

बुनियादी शिक्षा संकल्पना में मुख्य बिंदु है– ''मानवीय श्रम एवं उत्पादन से जुड़ा कोई उद्योग अथवा शिल्प प्रक्रिया का केन्द्र हो तथा स्वावलंबन आधारित उद्योग के उत्पादन शिक्षक के वेतन की भरपाई कर सके।'' यह सम्भव नहीं हो सका है कि विद्यालय उद्योग उत्पादन द्वारा अर्जित राशि से स्वपोषित हो।

उद्योग आधारित गतिविधियों में समय की आवश्यकतानुसार विविधता न होना

21वीं शताब्दी में बढ़ती आवश्यकताओं के दौर में उद्योग व गतिविधियों का सीमित होना बुनियादी शिक्षा की असफलता का करण है।

मातृभाषा के अतिरिक्त भाषाओं विशेषकर अंग्रेजी का शिक्षण न होना

अन्य विद्यालयों की तुलना में बुनियादी तालीम में अंग्रेजी भाषा का कोई स्थान नहीं है। अतः मातृभाषा से शिक्षण की अवधारणा ध्वस्त हो गई। यह बुनियादी तालीम की बहुत बड़ी दुविधा है।

इसके अतिरिक्त निम्न दुविधाएं हैं–

- क्राफ्ट केन्द्रित शिक्षा एवं बाल केन्द्रित शिक्षा

में विरोधाभास।

- बुनियादी शिक्षा के निहितार्थ की उचित व्याख्या न होना।
- सूचना प्रौद्योगिकी का समुचित उपयोग।
- शिक्षा को समग्रता से देखना होगा।
- शहर एवं गांव के बीच की समानता दूर करना।
- उद्योग व विषय में समवाय।
- ढांचागत एकरूपता।
- विश्व से प्रतियोगिता और गांव में सहकारिता।

उक्त बिंदुओं के आधार पर 21वीं सदी की चुनौतियों के सम्मुख अनेकानेक प्रश्न उठ खड़े हुए हैं जिनके लिए शिक्षाविद्ों को आत्म मंथन करना होगा और आधुनिक समय की आवश्यकताओं को मानवता और संस्कृति के रंग में रंग कर नवीन शैक्षिक संरचना तैयार करनी होगी जो भारत जैसे जनसंख्या बहुल, विविधता पूर्ण देश में जन आकांक्षाओं की कसौटी पर खरी उतरें।

(रतन लाल भोजक एवं संजय कुमार शर्मा– उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान गांधी विद्या मंदिर, सरदार शहर में कार्यरत्।)

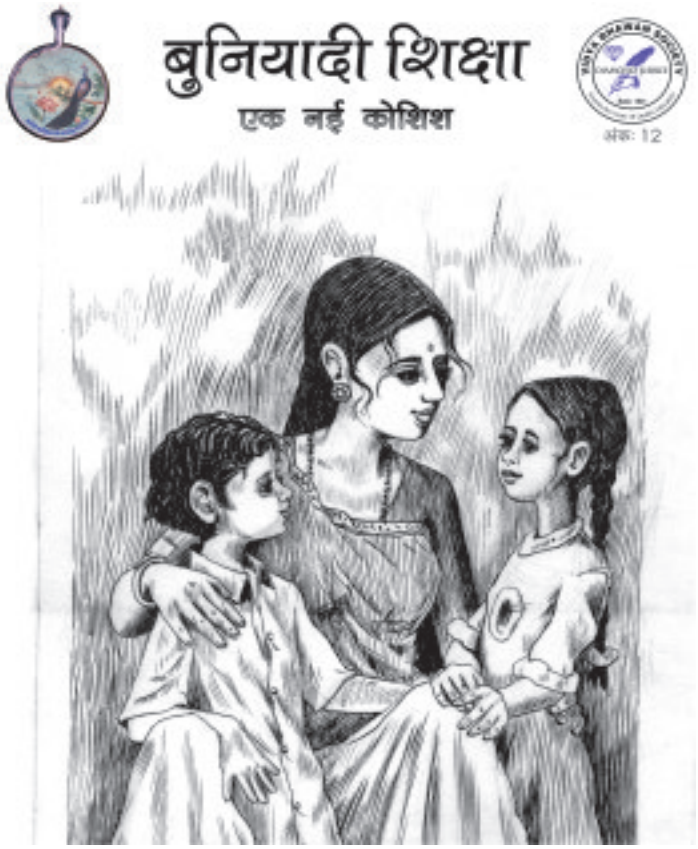

बुनियादी शिक्षा : कुछ पहलू

अरविन्द फाटक

गांधीजी ने 1932 में भारतीय शिक्षा की एक मौलिक योजना प्रस्तुत की जो कि बाद में बुनियादी शिक्षा, नई तालीम, वर्धा स्कीम आदि नामों से जानी जाने लगी। इस योजना का प्रभाव आज़ादी के बाद की शिक्षा नीति पर भी पड़ा। देश में कई बुनियादी व उत्तर बुनियादी विद्यालय स्थापित हुए, बुनियादी

शिक्षा के सिद्धांतों पर आधारित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी प्रारम्भ किए गए। राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय बुनियादी शिक्षा संस्थान की स्थापना भी हुई। परंतु यह उत्साह बहुत जल्द ही धूमिल हो गया और गांधी द्वारा प्रस्तावित बुनियादी शिक्षा को तिलांजली दे दी गई। सत्ता में बैठे कुछ लोगों का यह मानना था कि यह योजना मौलिक तो है पर इसमें आधुनिकता की कमी है। यह आदर्शवादी है पर व्यावहारिक नहीं है। कुछ लोगों का मानना है कि हमने गांधीजी की योजना को ठीक से समझा ही नहीं। अतः यह आवश्यक है कि हम बुनियादी शिक्षा के सिद्धांतों को समझें, गांधीजी के जीवनकाल में ही इन सिद्धांतों में परिवर्तन आए उन्हें देखें और फिर यह विश्लेषण करें कि बुनियादी शिक्षा आज की परिस्थिति में कितनी प्रासंगिक हैं?

बुनियादी शिक्षा के प्रमुख सिद्धांत–

1. सात वर्ष के लिए शिक्षा निःशुल्क एवं अनिवार्य हो।

2. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।

3. शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण समग्र (Holistic) हो। गांधीजी के अनुसार शिक्षा बच्चे के शरीर, मस्तिष्क एवं आत्मा (spirit) में निहित सर्वोत्कृष्ट गुणों को विकसित करने की प्रक्रिया है। शिक्षा से संपूर्ण मानव का विकास होना चाहिए, न केवल उसकी बुद्धि का।

4. शिक्षा की प्रक्रिया के केन्द्र में उद्योग के रूप में कोई न कोई उत्पादक श्रम कार्य होना चाहिए। गांधीजी मानते थे कि यदि बच्चा कोई उद्योग सीखता है और श्रम कार्य करता है एवं उस उद्योग में निहित सैद्धातिंक पक्ष को समझता है तो उसके शरीर, बुद्धि और आत्मा (spirit) का संतुलित विकास होगा। उद्योग के माध्यम से बच्चा गणित, विज्ञान एवं भाषा सभी विषयों का

ज्ञान प्राप्त कर सकता है। और ऐसी शिक्षा पूर्ण एवं संतुलित शिक्षा होगी।

5. गांधीजी का कहना था कि उद्योग को अलग से नहीं सिखाया जाए। विभिन्न विषयों का उद्योग के साथ सहसंबंध स्थापित कर सिखाया जाना चाहिए। बौद्धिक एवं शारीरिक श्रम कार्य साथ–साथ चलना चाहिए। यह सुझाव दिया गया कि बुनियादी शिक्षा का पाठ्यक्रम तीन प्रमुख केन्द्रों को आधार बनाकर विकसित किया जाना चाहिए। (क) भौतिक पर्यावरण (ख) सामाजिक पर्यावरण और (ग) उद्योग।

6. प्रारम्भ में गांधीजी ने स्वावलंबन के सिद्धांत पर जोर दिया था। उनकी अपेक्षा थी कि बच्चे अपने उद्योग के कार्य से कुछ आय कमा पाएंगे और इस प्रकार उनकी शिक्षा को सरकार की आर्थिक सहायता पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा जो शराब के कर से उत्पन्न आय से दी जाती है। गांधीजी को यह एहसास था कि अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा लागू करने के लिए बहुत धन की आवश्यकता होगी जो सरकार के लिए उपलब्ध कराना संभव नहीं होगा। साथ ही जब बच्चों द्वारा बनाई चीजें बाजार में बेची जाएगी तो उनकी गुणवत्ता की ओर भी ध्यान दिया जाएगा। परंतु आजादी के बाद गांधीजी ने आर्थिक स्वावलंबन के सिद्धांत पर आग्रह नहीं दिया। हां, शाला व्यवस्था में स्वावलंबन बुनियादी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पक्ष आज भी बना हुआ हैं।

7. सत्य एवं अहिंसा गांधीजी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा पद्धति की आधारशिला थी। इन मूल्यों को गाधीजी बुनियादी शिक्षा पद्धति के माध्यम से सुदृढ़ करना चाहते थे। वे इन मूल्यों को देश के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण मानते थे।

उपरोक्त सिद्धांत बुनियादी शिक्षा के आधारभूत सिद्धांत है। डॉ. जाकिर हुसैन का मानना था कि इस पद्धति से बच्चों में श्रम के प्रति आदर निर्माण होगा एवं बच्चे का केवल बौद्धिक विकास न होकर समग्र विकास होगा। बुनियादी शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य भी था। बच्चे सामाजिक प्रवृतियों के माध्यम से समाज को व उसकी समस्याओं को समझें और एक अच्छे समाज के निर्माण के लिए कार्य करें यह अपेक्षा थी।

भारत में बुनियादी शिक्षा के विचारों को स्वीकृती क्यों नहीं मिली?

आइए, अब हम इस बात का विश्लेषण करें कि बुनियादी शिक्षा क्यों राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति नहीं बन पाई?

1. **आधुनिकता की कमी** : जो लोग विज्ञान और टेक्नोलॉजी की प्रगति की चकाचौंध से प्रभावित थे एवं आधुनिकता की पाश्चात्य धारणा को मानते थे उनकी यह धारणा थी कि बुनियादी शिक्षा में आधुनिकता की कमी है। इस पद्धति को यदि राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति के रूप में अपनाया गया तो देश पिछड़ जाएगा। हमारी नई पीढ़ी आधुनिक

दुनिया की प्रतिस्पर्धा में टिक नहीं पाएगी। उनका मानना था कि बुनियादी विद्यालयों में सिखाए जाने वाले उद्योगों का आज की आधुनिक टेक्नोलॉजी की दुनिया में कोई स्थान नहीं हैं।

2. **गरीबों द्वारा भी इसे स्वीकार नहीं किया गया** : सामाजिक सीढ़ी में ऊपर उठने की महत्वकांक्षा गरीबों को भी अभिजाज्य वर्ग के विद्यालयों की ओर आकृष्ट करने लगी। उनको लगा बुनियादी शालाओं में यदि वे अपने बच्चों को पढ़ाएगें तो वे पिछड़े ही रह जाएंगे।

जब तक बुनियादी शिक्षा को एक वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था के रूप में रखा गया, इसके जिंदा रहने की संभावना कम ही बन पाई। सबकी आकांक्षा बच्चों को पब्लिक स्कूल में भेजने की ही रही हैं।

3. **सहसंबंध की समस्या** : बुनियादी शिक्षा का यह आग्रह की सभी ज्ञान उद्योग से सहसम्बन्धित करके दिया जा सकता है एक अतिश्योक्ति थी। इस विचार को बहुत विस्तार से स्पष्ट करने का प्रयास भी नहीं किया गया। उद्योग का संबंध आत्मीक विकास ैचपतपजनंस क्मअमसवचउमदजद्ध से जोड़ना और भी स्पष्ट नहीं था।

4. **बुनियादी शिक्षा मूलतः** 7 वर्षो की शिक्षा पद्धति थी। जो बच्चे इसके आगे पढ़ना चाहते हैं उनका क्या होगा। हालांकी उत्तर बुनियादी विद्यालयों की स्थापना की गई परंतु उच्च शिक्षा के बारे में कोई ठोस विचार नहीं रखा गया।

5. तेजी से फैलती हुई प्राथमिक शिक्षा के लिए बुनियादी शिक्षा जैसी जटिल शिक्षा पद्धति अपनाना संभव नहीं था। जहां हम प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय में दो शिक्षक देने में कठिनाई अनुभव कर रहे है, वहां बुनियादी शालाओं को चलाने वाले निपुण शिक्षक पर्याप्त संख्या में उपलब्ध करवाना असंभव था।

6. अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय अभिभावकों के लिए अपने स्टेट्स के प्रतीक बन गए अतः बुनियादी विद्यालय अभिभावकों की अंतिम पसंद बन गए। अभिजात्य वर्ग के अभिभावकों ने तो अपने बच्चों के लिये पब्लिक स्कूल ही चुने थे। ऐसी स्थिति में बुनियादी विद्यालयों का चल पाना मुश्किल था।

आज के संदर्भ में प्रासंगिकता

यद्यपि बुनियादी शिक्षा आजादी के बाद राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति के रूप में विकसित नहीं हो सकी लेकिन आबादी के बाद गठित विभिन्न आयोगों एवं समितियों ने उद्योग या कार्यानुभव को स्कूली शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग बनाने की सिफारिश की है।

शिक्षा आयोग (1966) ने स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम में कार्यानुभव शामिल करने की सिफारिश की है। आयोग ने कार्यानुभव का अर्थ विद्यालय, घर पर, किसी वर्कशॉप या फेक्ट्री में या खेत पर उत्पादक कार्य करना माना है। आयोग ने समाज सेवा को भी शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग माना है।

आयोग का मानना था कि हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति में कार्य को हीन समझा जाता है और इस कारण विद्यार्थी अपने घर एवं समुदाय के वातावरण से दूर हो जाते हैं। ईश्वर भाई पटेल कमेटी ने समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा को

शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग बनाने की सिफारिश की थी। यह गांधीजी की विचारधारा की पुष्टि है।

प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (1975) में भी कार्यानुभव को शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग बनाने की सिफारिश की गई है। इसमें कहा गया है कि कार्यानुभव द्वारा बच्चों को हाथ से काम करके सीखने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। कार्यानुभव द्वारा विद्यार्थियों में किसी उत्पादक कार्य में भौतिक संसाधनों एवं मानवीय संबंधों के महत्व को समझने की अंतर्दृष्टि विकसित होती है। इससे समानता एवं स्वतंत्र वातावरण में मिलजुल कर काम करना किसी लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु या सामाजिक उत्तरदायित्व के निर्वाह हेतु आवश्यक है, यह दृष्टिकोण विकसित होता है। यह विचार भी बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत के करीब है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में भी प्राथमिक स्तर पर बालकेन्द्रित एवं प्रवृत्तियों पर आधारित शिक्षा (Child centered and Activity based education) पर बल दिया गया है। माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा की अनुशंसा की गई है शिक्षा नीति से पूर्व प्रकाशित दस्तावेज में भी श्रम के प्रति आदर निर्माण करने की बात कही गई है।

स्कूली शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के प्रारूप (2000) तथा (2005) में भी कार्य शिक्षा को उत्पादकता बढ़ाने के लिए एवं समाज सेवा के लिए आवश्यक माना गया है।

उपरोक्त चर्चा का सार यह निकलता है कि यद्यपि बुनियादी शिक्षा को यथावत राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति के रूप में स्वीकार न किया गया हो इसके अंतर्निहित सिद्धांतों को विभिन्न आयोगों एवं समितियों ने स्वीकारा है।

बुनियादी शिक्षा के जो सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं

1. उत्पादक कार्य शिक्षा का आवश्यक अंग होना चाहिए।
2. विद्यार्थी किसी उद्योग को यंत्रवत तरीके से न सीखकर, उससे संबंधित सभी ज्ञानात्मक एवं कौशल पक्ष को आत्मसात करें।
3. समुदाय में जाकर कार्य करने का अनुभव विद्यार्थियों की शिक्षा का आवश्यक अंग बनाना चाहिए।
4. विद्यालय या समुदाय में शारीरिक श्रम करने का अवसर विद्यार्थियों को मिलना चाहिए ताकि उनके मान में श्रम के प्रति श्रद्धा निर्माण हो सके।
5. सत्य एवं अहिंसा ऐसे मूल्य है जिनकी आज के समाज में अत्यधिक आवश्यकता है। विद्यालय द्वारा इन मूल्यों को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

(अरविन्द फाटक, रिटायर्ड प्राचार्य — एस.जी के टीचर्स कालेज जोधपुर से। वर्तमान में शैक्षिक कार्यों में सक्रिय रूप से संलग्न।)

शांति के लिए शिक्षा

के. आर. शर्मा

एनसीईआरटी के तत्त्वावधान में निर्मित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या–2005 में स्कूली शिक्षा के संदर्भ में पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, किताबें, शिक्षण और शिक्षण विधि, परीक्षा आदि–आदि मसलों पर अनुशंसाएं की हैं। दस्तावेज जहां शिक्षा की तथाकथित प्रचलित मान्यताओं मसलन रटंत विद्या, स्कूल की चाहर दीवारी में होने वाली शिक्षा आदि को नकारता है वहीं सामाजिक सरोकारों को शिक्षा से जोड़ते हुए उनके जवाब ढूंढ़ने की पेशकश भी करता है। यह मसौदा शिक्षा के दायरे में काम और ज्ञान की दुनिया में तालमेल बिठाने की दरकार भी करता है। सामाजिक सरोकारों में समाज की ज्वलंत समस्याओं पर भी न केवल ध्यान आकर्षित करता है बल्कि उनसे निपटने में शिक्षा कैसे भूमिका अदा कर सकता है, यह हल भी बताता है। यह मसौदा समाज में शांति की स्थापना के लिए भी शिक्षा को ही जिम्मेदार मानता है। इसी कारण से ऐसी शिक्षा की अनुशंसा करता है जो समाज में शांति की स्थापना करें। भारतीय शिक्षा के इतिहास पर नजर डालें तो यह कोई नया तो नहीं है लेकिन शिक्षा के महत्वपूर्ण आयामों में से एक हैं।

यह बात कतई छिपी हुई नहीं है कि समाज आज गलाकाट प्रतिस्पर्धा के दौर से गुजर रहा है। समाज में शिक्षा का दायरा तो बढ़ता जा रहा है लेकिन कहीं ज्यादा अशांति बढ़ रही है। यह दस्तावेज स्वीकार करता है कि देश–दुनिया में हिंसा और आतंकवाद का जोर बढ़ता ही जा रहा है। पड़ोसी घरों से लगाकर पड़ोसी देशों के रिश्तों में खटास बढ़ती जा रही है। इतिहास गवाह है कि पिछले दो महायुद्ध दुनिया के शिक्षित समझे जाने वाले देशों के कारनामों के कारण लड़े गए थे। और आज भी यदि युद्धों का डर है तो दुनिया के शिक्षित देशों से ही है। दुनिया इस बात को जानती है कि यदि आज के युग में महायुद्ध होता है तो वह किसी भी देश के लिए हार या जीत का परिणाम बनकर नहीं रहेगा बल्कि उससे पूरी दुनिया का नाश हो सकता है। जिस प्रकार से स्कूलों में शिक्षा दी जाती है क्या उससे हिंसा को बढ़ावा मिलता है? इसका जवाब काफी हद तक हां ही है। इस लिहाज से वर्तमान शिक्षा के मकसदों पर नए सिरे से गौर करने की आवश्यकता है।

शिक्षा के उद्देश्यों पर नजर डालें तो आज केवल किताबी ज्ञान को बच्चों में स्थानांतरित किया जाता है। शिक्षा का मतलब केवल यह लगा लिया गया कि जानकारी को मात्र रट भर लिया जाए। इसके लिए ऐसी किताबें बनाई जाने लगी, जो महज जानकारियों का पुलिंदा होती है। और इन जानकारियों का हकीकत की जिंदगी से कोई लेना–देना नहीं होता। दरअसल आज की शिक्षा में नैतिकता, न्याय, शांति, सत्य, अहिंसा आदि का पाठ तो पढ़ाया जाता है लेकिन ये बातें स्कूली माहौल में न तो बच्चे हजम कर पाते हैं और न ही शिक्षक। शिक्षक से लगाकर समाज के हर तबके को लगता है कि ये बातें महज़ स्कूल में परीक्षा पास करने के संदर्भ में कही गई है। और इनको इसी अंदाज में परीक्षा पास करने के लिए ध्यान में रखनी है। विडंबना की बात है कि किताबों में ऐसी चिपकियां अलग–थलग ही दिखाई देती हैं जो खोखले उपदेश परोसती है।

आज़ादी के बाद गांव–गांव में स्कूल और कस्बाई स्तर पर कॉलेज धड़ल्ले से खुलते गए। डिग्रियां कई गुना ज्यादा बंटने लग गई। लेकिन एक शिक्षित समाज गढ़ने के बजाए यहां होड़ पनपने लगी। समाज में अशांति और तनाव बढ़ने लगा। आंतकवाद ने पैर पसारना प्रारम्भ किया। होड़ में अग्रणी बने रहने के लिए तरह–तरह के झूठ–फरेब जैसे हथकंडों का सहारा लिया जाने लगा। जो छात्र डिग्रियां लेकर बाहर निकलते हैं उनमें एक अजीब किस्म की परेशानी और अविश्वास किन्तु अहम भावना दिखाई देती है। और किसी भी तरह से अपना स्वार्थ सिद्ध करने की और हम किसी से कम नहीं की मानसिकता बन जाती है। आजकल अधिकांश शिक्षित लोग इस अद्भुत भ्रांति में है कि जितना ऊंचा पद होगा और जितना ऊंचा वेतन होगा उतने ही उनके सुख में इजाफा होगा। संसार में ऐसे लोग भी हैं जो संपन्नता के बावजूद दुःखी हैं। ऐसे लोग भी हैं जो अपनी साधारण आर्थिक स्थिति में खुश हैं। इन सबके चलते समाज में अशांति का माहौल दिखाई देता है।

इसका जवाब वर्तमान शिक्षा में नहीं है बल्कि गांधी के शिक्षा दर्शन में है। गांधी की नई तालीम सर्वांगीण शिक्षा देती है। नई तालीम महज शिक्षण विधि ही नहीं है। वह तो एक नया जीवन दर्शन है। नई तालीम एक नया अहिंसक समाज, सर्वोदयी समाज की रचना करना चाहती है। नई तालीम जीवन की शिक्षा है। आज की शिक्षा प्रणाली तो मात्र बाबू पैदा करने की व्यवस्था मात्र है। यह व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से चरित्र निर्माण में भी मदद नहीं करती है। सहयोग, समरसता और सामाजिक जीवन के

साथ सामंजस्य की तो बात ही छोड़िए। आज जानकारी बढ़ाते जाने को ही शिक्षा माना जा रहा है। ज्ञान प्राप्ति एवं उसमें वृद्धि तथा जानकारी में भेद हमें करना होगा। गांधी ने जिस बुनियादी शिक्षा की बात कही तथा जिसे उन्होंने अपनी सर्वोत्कृष्ट देन माना उस पर आज अत्यन्त गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। गांधीजी के अनुसार सच्ची शिक्षा वही है जो मनुष्य में शांति, स्वावलंबन, सीखने की प्रवृत्ति, निर्भयता, समाज के साथ समरसता आदि गुणों में वृद्धि करती हो तथा चरित्र रचना और समाज रचना का सशक्त माध्यम हो। पर वर्तमान परिस्थिति इससे एकदम विपरीत है।

यही कारण है कि नई तालीम में काम को महत्व काफी दिया गया। काम भी ऐसा हो जो उत्पादन से जुड़ा हो। और काम के माध्यम से जो अनुभव का ज्ञान मिले वो ही सच्चा ज्ञान होता है। गांधी ने गुलामी के दौर में इस बात को समझ लिया था कि आजाद भारत में शिक्षा के माध्यम से ही क्रांति लाई जा सकेगी। इसी लिहाज से उन्होंने न केवल गोरे लोगों से देश को आज़ाद करवाया बल्कि इस देश को ऐसी शिक्षा पद्धति भी सौंपी जिसके जरिए स्वावलंबित, शिक्षित, जिम्मेदार समाज का निर्माण हो सके। शांति की स्थापना करने के लिए प्रार्थना एक मात्र हल नहीं है। गांधी ने कहा कि यदि बच्चों को काम करने के मौके मिलेंगे तो उनके मन में कोई गलत विचार नहीं आएंगे। नई तालीम के संदर्भ में कहा है कि ''जब कोई बच्चा मेहनत करता है तो उसके मन में शांति से जुड़े हुए भाव पैदा होते हैं, अहिंसा से जुड़े भाव पैदा होते हैं। और इसलिए मेहनत एक नैतिक ताकत है।'' यही कारण है कि नई तालीम के अंतर्गत शांति का सीधे–सीधे कोई पाठ नहीं पढ़ाया जाता।

बहरहाल, नेशनल करिकुलर फ्रेमवर्क के जरिए से शिक्षा के उद्देश्यों को खंगालकर उनको स्थापित करने की यह एक मुहिम कही जा सकती है। इसका मतलब यह भी है कि गांधी के शिक्षा के विचारों पर जो धूल जमा हो गई थी उनको झटकारा जा रहा है। अब सवाल इस बात का है कि शिक्षा के माध्यम से शांति, सत्य और अहिंसा का आगाज़ स्कूलों में कैसे किया जाए? इस मसले को महज किताबी पाठों के रूप में पढ़ाने से कैसे बचा जा सकता है। बच्चों में शांति की भावना का विकास हों इस तरह के प्रयास स्कूल को करने होंगे। बच्चों के लिए इस प्रकार की गतिविधियां सृजन करनी होगी और ढूंढ़नी होगी। बच्चों को सम्मान देना होगा। उनमें विश्वास करना होगा। बच्चों के बीच से होड़ और प्रतिस्पर्धा हटाकर समूह भावना को स्थान देना होगा।

अक्सर जब कोई नई योजना आती है तो निर्धारित समय में सफलता दिखाना शिक्षा विभाग की अपनी मजबूरी होती है। इतिहास गवाह है कि इस तरह की कई योजनाओं को कागज़ पर जबर्दस्ती सफल साबित कराने के चक्कर में उसकी मूल भावना को कुचल दिया जाता है।

(**के.आर.शर्मा** – विद्या भवन शिक्षा संदर्भ केंद्र, उदयपुर में कार्यरत। बुनियादी शिक्षा पत्रिका की संपादन प्रक्रिया में संलग्न।)

तुम्हारे हाथ

तुम्हारे हाथ
पत्थरों की तरह
संगीन है

जेल में गाए गए
गीतों की तरह उदास हैं
बोझ ढोने वाले पशुओं
की तरह सख्त हैं

तुम्हारे हाथ
भूखे बच्चों के तमतमाए
चेहरों की तरह हैं

तुम्हारे हाथ मधुमक्खियों
की तरह दक्ष और
उद्योगशील हैं

उन स्तनों की तरह भारी हैं
जिनमें दूध छलकता
होता है

कुदरत की तरह जुझारू हैं
अपनी खुरदरी खाल के भीतर
दोस्ती की मुलायमत
छिपाए होते हैं

यह दुनिया बैलों के सींग पर नहीं
टिकी हुई है
यह दुनिया तुम्हारे हाथों पर
नाचती है।

नाज़िम हिक़मत

स्वावलंबन जीवन की झलक